।। त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।।

Mar-89 P-20

जालन्धर पीठ सिद्ध

धूमावती सिद्ध साधना

२४-१२-८९

यों तो दस महाविद्याओं में धूमावती को काफी महत्व दिया है, क्यों कि यह शत्रुओं का मर्दन करने के लिये विख्यात रही है। पत्रिका के पिछले अंको में मांत्रोक्त धूमावती साधना को स्पष्ट किया है, पर इस बार धूमावती से संबंधित एक अत्यन्त दुर्लभ और गोपनीय तांत्रोक्त रहस्य प्राप्त हुआ है, जो कि आगे के पृष्ठो में स्पष्ट कर रहा हूं।

जालन्धर नाथ चौरासी सिद्धों में माने गये है, और गुरु गोरखनाथ की टक्कर के योगी रहे है, उन्होंने अपने जीवन में धूमावती पर एक ही ग्रन्थ की रचना की थी, और उसी की दुर्लभ पाण्डुलिपी हमें प्राप्त हुई है, जो कि धूमावती साधना की श्रेष्ठतम विधि है।

आगे की पंक्तियों में महायोगी सिद्ध जालन्धरनाथ द्वारा प्रणीत तांत्रोक्त धूमावती साधना को इस महत्वपूर्ण दिवस पर स्पष्ट कर रहा हूं।

पौष कृष्ण १२ को धूमावती सिद्धि दिवस माना गया है, जो कि अंग्रेजी तारीख के अनुसार इस वर्ष २४-१२-८९ को स्पष्ट हो रहा है, यह दिन अपने आपमें साधकों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जालन्धर नाथ धूमावती साधना के सिद्धतम आचार्य थे, उन्होंने सर्वथा नवीन पद्धति से धूमावती सिद्ध की थी, कहते है, कि उनके नेत्रों में अग्नि का प्रत्यक्ष प्रभाव था, और वे तीक्ष्ण दृष्टि से लोहे को भी देख लेते थे तो वह भी पिघल कर पानी बन जाता था।

इसी परम्परा में गढवाल की राजधानी टिहरी के

Nov 89 जालन्धर पीठ सिद्ध

धूमावती सिद्ध साधना

राजगुरू भेदानन्द जी आते है, जिन्होंने कुछ ही वर्ष पहले शरीर त्यागा है. वे धूमावती के सिद्धतम आचार्य थे और पूरे गढ़वाल में ही नहीं, अपितु पूरे भारतवर्ष में उनका प्रभाव रहा है।

वे कई महत्वपूर्ण घरानों के राजकुमारों को तांत्रोक्त दीक्षा और साधना सिद्ध कराने के लिए नदी के किनारे ले जाते और वहां उन्हें यह साधना सिद्ध करवाते पूरे भारतवर्ष में योगीराज भेदानन्द जी को ही जालन्धर पीठ सिद्ध धूमावती साधना का पूर्णता के साथ ज्ञान था।

इस बात के तो सैकड़ों प्रत्यक्ष दर्शी गवाह है, कि वे नदी के किनारे धोती ओढ़कर सो जाते थे, और अन्दर धूमावती मन्त्र जप करते, यों उन्हें धूमावती पूर्ण रूप से सिद्ध थी।

एक निश्चित संख्या में मन्त्र जप करने के बाद वे चेहरे से धोती हटा कर जिस शत्रु को भी देख लेते, वह वहीं पछाड़ खा कर गिर जाता, और उसकी तत्काल मृत्यु हो जाती। भेदानन्द जी ने नदी के किनारे ही हरे भरे विशाल पेड़ पर इस प्रकार का मन्त्र जाप कर दृष्टि डाली थी, तो वह पेड़ अन्दर ही अन्दर सूख कर ठूंठ हो गया था, और उसके पत्ते झड़ गये थे, ऐसा लगा था, कि जैसे यह पेड़ अपने जीवन में कभी हरा भरा रहा ही न हो, वह पेड़ आज भी नदी के किनारे सूखे ठूंठ की तरह खड़ा हुआ है।

धूमावती दस महाविद्याओं में एक प्रमुख महाविद्या हैं, जिसे सिद्ध करना साधक का सौभाग्य माना जाता है। जो साधक अपने जीवन में निश्चिन्त और निर्भीक रहना चाहता है, जो अपने जीवन में निरन्तर उन्नति करना चाहता है, जिस साधक में थोड़ा बहुत भी दम खम होता हैं, वह धूमावती साधना अवश्य ही सिद्ध करता है।

धूमावती साधना

महायोगी सिद्ध जालन्धर नाथ जी ने धूमावती सिद्धि के छः प्रमुख लाभ बताये है, जो कि केवल धूमावती साधना से ही प्राप्त हो सकते है। अन्य किसी भी प्रकार के देवी देवता या महाविद्या साधना करने पर ये लाभ प्राप्त नहीं हो सकते, जालन्धर नाथ अनुभव गम्य सिद्ध योगी थे, और उनका कथन अपने आप में प्रामाणिक कथन माना जाता हैं। उनके अनुसार निम्न छः लाभ केवल धूमावती के द्वारा ही संभव है।

१- धूमावती सिद्ध करने पर साधक का शरीर वज्र की तरह मजबूत और लोहे की तरह सुदृढ़ हो जाता है। उस पर सर्दी गर्मी भूख प्यास या किसी भी प्रकार के रोग का प्रभाव व्याप्त नहीं होता।

२- धूमावती सिद्ध करने पर व्यक्ति का शरीर वज्र की तरह मजबूत हो जाता है और उस पर बन्दूक, तलवार, या शस्त्र आदि का कोई भी प्रभाव व्याप्त नहीं होता।

३- धूमावती सिद्ध होने पर उसकी आंखों में साक्षात् अग्नि देव उपस्थित रहते है, वह तीक्ष्ण दृष्टि से जिस शत्रु को भी देख कर मन ही मन धूमावती मंत्र का उच्चारण करता है, वह शत्रु तत्क्षण भस्म हो जाता है, और निश्चय ही उसका प्राणान्त हो जाता है, वह किसी पेड़, किसी पक्षी या जिस किसी पर भी तीक्ष्ण दृष्टि डालता है, वह निश्चित रूप से समाप्त हो जाता है।

४- ऐसे साधक की आंखों में प्रबल सम्मोहन एवं आकर्षण शक्ति आ जाती है, जिसके फलस्वरूप वह किसी भी पुरूष या स्त्री को हमेशा हमेशा के लिए अपने वश में कर सकता है।

५- ऐसी साधना करने वाले, की रक्षा धूमावती स्वयं करती रहती है, वह यदि शत्रुओं के बीच अकेला भी चला जाता है, तो उसका बाल भी बांका नहीं होता, चाहे कितने ही विरोधी हो, आलोचक या निन्दक हो, उसके सामने प्रभावहीन एवं निस्तेज ही रहते है, और जब वह बोलता है तो व्यक्ति उसके समर्थन में ही रहता है, जिनको बड़े प्रतिष्ठान के कार्य संभालने होते है, उनके लिए तो यह साधना वरदान स्वरूप है।

६- धूमावती सिद्ध करने पर उसके जीवन में शत्रु

नहीं रह पाते, उसमें श्राप देने की अद्भुत क्षमता आ जाती है, और यदि वह नहीं भी चाहता, तब भी उसका जो विरोधी या शत्रु होता है, उसका अपने आप पतन होने लग जाता है, ऐसा व्यक्ति वाद विवाद में या मुकदमों में निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

यों तो इस महाविद्या साधना के अगणित लाभ है, परन्तु जो व्यक्ति आज के जीवन में उन्नति चाहता है, जो व्यक्ति शत्रुओं पर प्रहार कर विरोधियों को अपने अनुकूल बनाना चाहता है, जो अपने जीवन में निरन्तर उन्नति चाहता है, उसके लिए यह साधना अवश्य ही उपयोगी और अनुकूल है।

साधना रहस्य

यों तो इसके लिए धूमावती दिवस का प्रचलन तांत्रिक ग्रन्थों में है ही, जो कि पौष कृष्ण द्वादशी है परन्तु कोई भी साधक किसी भी मंगलवार से भी यह साधना प्रारम्भ कर सफलता अर्जित कर सकता है। इस साधना को कोई भी सम्पन्न कर सकता है तथा दिन या रात्रि में कभी भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

साधकों को चाहिए कि वे इस दिवस का महत्व समझे और इस दिन धूमावती साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें।

साधना प्रयोग

मैं आगे के पृष्ठों में उस गोपनीय रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं जो महा सिद्ध जालन्धर नाथ जी ने धूमावती को सिद्ध करने के समय प्रयोग किया था।

साधक स्नान कर काली धोती धारण कर, व्याघ्र चर्म अथवा मृग चर्म पर बैठ जाय, यदि यह सभव न हो तो, ऊनी आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय। सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर काला कपड़ा बिछा दें और उसके ऊपर लोहे की अथवा स्टील की थाली रख दे, इस थाली के अन्दर पूरी तरह से काजल लगा दें।

इसके बाद साधक चांदी की शलाका से या तिनके की सहायता से एक बूढ़ी स्त्री का चित्र अंकित करें जिसके बाल बिखरे हुए हो, और जिसके गले में नरमुण्ड की माला धारण की हुई हो, यह धूमावती का प्रतीक चिन्ह है।

इसके बाद साधक एक दूसरी स्टील की थाली में ग्यारह तेल के दीपक लगावे, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, इस साधना में अगरबत्ती आदि की आवश्यकता नहीं होती।

इसके बाद साधक थाली में जो धूमावती का चित्र बनाया है, उसके सिर के चारों ओर ग्यारह हकीक नग रखे, धूमावती के बांये पैर के पास लघु नारियल स्थापित करे और दाहिने पैर के पास सियारसिंगी स्थापित करे। धूमावती के वक्षस्थल पर या हृदय पर मोती शंख रखें और उसके चारों ओर पांच रुद्राक्ष के दाने रखें।

इसके बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प ले, कि मैं अमुक गौत्र अमुक पिता का पुत्र अमुक नाम का साधक पूर्ण क्षमता के साथ जालन्धर पीठ सिद्ध धूमावती को सिद्ध कर रहा हूं, ऐसा कह कर जमीन पर छोड़ दें।

इसके बाद हाथ में जल ले कर निम्न मन्त्र पढे, उसे विनियोग कहते है–

विनियोग प्रयोग

ॐ अस्य मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो मातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराश्शक्तयस्तदुभयकोलकमभीष्ट सिध्यर्थे विनियोग:।

विनियोग के बाद निम्न अंगो को स्पर्श करते हुए,अंग न्यास करे -

अंग न्यास

ॐ धां हृदयाय नमः
ॐ धीं शिरसे स्वाहा
ॐ धूं शिखायै वषट
ॐ धैं कवचाय हुं
ॐ धौं नेत्र त्रयाय वौषट
ॐ धः अस्त्राय फट्

इसके बाद साधक करन्यास करे, इसमें जिन जिन अंगूठे या उंगली का वर्णन है, उसको देखते हुए उच्चारण करे, इसे करन्यास कहते है ।

कर न्यास

ॐ धां अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ धीं तर्जनीभ्यां स्वाहा,
ॐ धूं मध्यमाभ्यां वौषट
ॐ धैं अनामिकाभ्यां हुं
ॐ धौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट
ॐ धः करतलकर पृष्ठांभ्यां फट्

इसके बाद बांये हाथ में थोडे से चावल ले कर इन चावलों को कुंकुम से रंग कर यंत्र पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए थोड़े थोड़े डाले जिससे की प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग सम्पन्न किया जा सके ।

प्राण प्रतिष्ठा

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं श षं सं हं ॐ क्षं सं हंसः ह्रीं ॐ हं सः श्री मद्धमावत्या प्राणा इह प्राणाः ।। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं स हं ॐ क्षं सहसः ह्रीं ॐ हंसः श्री मावत्या जीवन इह स्थितः ॐ ह्रोक्रों- यं रं ल वं शं ष सं हं ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ हंसः श्री मद्धमावत्यास्सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि । आं ह्रीं क्रों य र लं वं शं षं सं हं ॐ क्ष सं हंसः श्री मद्धमा- वत्या वाड्मनश्चक्षूश्श्रोत्रप्राणप्राणा इहागत्य सुख श्चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

इसके बाद साधक दोनों हाथों में पुष्प ले कर धूमावती यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्न प्रकार से ध्यान करें ।

धूमावती ध्यान

विवर्णा चंचला दृष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ।
काकध्वजरथारूढा विलम्बित पयोधरा ।
शूर्प्यहस्तातिरूक्षा च धूतहस्ता वरान्विता ।
प्रवृद्धघोणा तु भृशकुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यम्भयादा कलहास्पदा ।।

इसके बाद साधक सफेद हकीक माला से निम्न धूमा- वती मंत्र की २१ माला मंत्र जप करे, इस अवधि में साधक उठे नहीं और पूरी २१ माला मंत्र जप होने के बाद ही उठे, साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रखे कि जो ग्यारह तेल के दीपक लगाये वे बराबर जलते रहे।

धूमावती मंत्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक थाली में जो कुछ तांत्रोक्त सामग्री है, उसके मध्य में वह हकीक माला भी रख दे और वह सारी सामग्री घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर जमीन में गाड़ दे । अथवा नदी या तालाब में विसर्जित कर दे, यदि साधक दिन में साधना कर रहा है तो रात्रि को यह सामग्री विसर्जित कर सकता है, अथवा दिन में भी इस पूरी सामग्री को जो थाली में है, वह जमीन में गाड़ सकता है अथवा नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित कर सकता है ।

ऐसा करने पर यह धूमावती साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाती हैं । यद्यपि यह साधना दिखने में अत्यन्त सरल प्रतीत होती है परन्तु इसकी विधि और इसका प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण है, जिन जिन लोगों ने भी इस साधना को सम्पन्न किया हैं उन्हें उपरोक्त बताये लाभ प्रतीत हुए हैं ।

वास्तव में ही साधकों का सौभाग्य हैं कि उन्हें जाल- न्धर नाथ जी द्वारा प्रणीत इतनी दुर्लभ साधना प्राप्त हुई है, उन्हें अवश्य ही इस दिन का उपयोग करते हुए यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए ।

इस साधना में वर्णित सभी सामग्री जालन्धर नाथ द्वारा प्रणित मंत्रों से सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए तभी पूर्ण अनुकूलता प्राप्त हो सकती है ।

P-24

भुवनेश्वरी रहस्य साधना

१७-१२-८९

तांत्रिक ग्रन्थों में भगवती भुवनेश्वरी को आद्या शक्ति कहा गया है, यों तो भगवती के दस प्रमुख स्वरूप है, जिन्हे दस महाविद्याएं कहा गया है

काली तारा महा-विद्या षोडशी भुवनेश्वरी ।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ।।
बगला सिद्ध-विद्या च मातंगी कमलात्मिका ।
एता दश महा-विद्या सिद्ध-विद्या प्रकीर्तिता ।।

अर्थात १- काली, २- तारा, ३- षोडशी, ४- भुवनेश्वरी, ५- भैरवी ६- छिन्नमस्ता, ७- धूमावती, ८- बगला, ९- मातंगी, १०- कमला, इन दस स्वरूपों को महाविद्या कहा गया है ।

पर इन दस महाविद्याओं में भी भुवनेश्वरी को आद्या शक्ति या मूल प्रकृति कहा गया है, और इसीलिए तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट किया गया है, कि जिसने अपने जीवन में भगवती भुवनेश्वरी को सिद्ध नहीं किया वह साधक हो ही नही सकता ।

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार पौष कृष्ण ५ तदनुसार इस वर्ष १७-१२-८९ को भगवती "भुवनेश्वरी दिवस" है, इस दिन इसको सिद्ध करने पर सम्पूर्ण सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है ।

भुवनेश्वरी तो सही अर्थों में जीवन का आधार है, वह सम्पूर्ण जीवन को जगमगाहट प्रदान करने वाली और सम्पूर्ण जीवन को आलोकित करने वाली है, भौतिक जीवन में तो भुवनेश्वरी का सर्वाधिक महत्व है ।

महर्षि अगस्त्य ने तो भुवनेश्वरी के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की है, महर्षि अगस्त्य ही नहीं अपितु

विश्वामित्र, कणाद, स्वामी शंकराचार्य, योगाचार्य और गुरू गोरखनाथ तक ने यह स्वीकार किया है, कि भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता एक मात्र भुवनेश्वरी साधना से ही संभव है।

गुरू गोरखनाथ ने तो भुवनेश्वरी सिद्ध करने के बाद अपने ज्ञान बल और साधना बल से यह अनुभव किया था कि हमें अपने जीवन में अन्य देवी देवताओं की साधना करनी ही नहीं है, यदि कोई साधक पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी भी दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता।

तंत्र सार एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसको अत्यन्त ही प्रामाणिक माना जाता है, उसमें भगवती भुवनेश्वरी साधना के दस लाभ स्पष्ट रूप से वर्णित किये है।

१- भुवनेश्वरी साधना से निरन्तर आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक उन्नति होती ही रहती है, जो अपने भाग्य में दरिद्र योग लिखा कर लाया है, जो व्यक्ति जन्म से ही दरिद्री है, वह भी भुवनेश्वरी साधना कर अपनी दरिद्रता को समृद्धि में बदल सकता है।

२- भुवनेश्वरी साधना ही एक मात्र कुण्डलिनी जागरण साधना है, इसी साधना से स्वतः शरीर स्थित चक्र जागृत होने लगते हैं, और अनायास उसकी कुण्डलिनी जागृत हो जाती है, और ऐसा होने पर उसका सारा जीवन जगमगाने लग जाता है।

३- एक मात्र भुवनेश्वरी साधना ही ऐसी है, जो जीवन में भौतिक उन्नति और आध्यात्मिक प्रगति एक साथ प्रदान करती है।

४- भुवनेश्वरी को आद्या मां कहा गया है, फलस्वरूप भुवनेश्वरी साधना से योग्य संतान प्राप्त होती है, और पूर्ण संतान सुख प्राप्त होता है।

५- भुवनेश्वरी साधना इच्छित साधना हैं, यदि पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी को सिद्ध कर लिया जाय तो व्यक्ति जो भी इच्छा या आकांक्षा रखता है, वह इच्छा अवश्य ही सम्पन्न होती है।

६- भुवनेश्वरी सम्मोहन स्वरूपा है, तंत्र सार के अनुसार भुवनेश्वरी साधना करने से पुरुष या स्त्री का सारा शरीर एक अपूर्व सम्मोहन अवस्था में आ जाता है, जिसके व्यक्तित्व से लोग प्रभावित होने लगते है, और वह जीवन में निरन्तर उन्नति करता रहता हैं।

७- भुवनेश्वरी भोग और मोक्ष दोनों को एक साथ प्रदान करने वाली है, यही एक मात्र ऐसी साधना है जिसको सम्पन्न करने पर जीवन में सम्पूर्ण भोगों की प्राप्ति होती है, तो जीवन के अन्त में पूर्ण मोक्ष प्राप्ति भी होती है।

८- भुवनेश्वरी "रोगान शेषा" है, अर्थात् भुवनेश्वरी साधना करने पर असाध्य रोग भी समाप्त हो जाते है, और जीवन में अथवा परिवार में किसी प्रकार का कोई रोग व्याप्त नहीं होता।

९- "तोड़ल तंत्र" में बताया है, कि भुवनेश्वरी शत्रु संहारिणी है, इसकी साधना करने वाले साधक के शत्रु स्वतः ही समाप्त हो जाते है, यहां तक कि जो भी व्यक्ति इस प्रकार के साधक के प्रति दुराग्रह या शत्रु भाव रखते है, वे अपने आप समाप्त होते रहते है, और उनका जीवन बरबाद हो जाता है।

१०- भुवनेश्वरी को योग माया कहा गया है, इसकी साधना कर जीवन में धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति निश्चित रूप से होती है।

इन सारे तथ्यों को केवल एक ऋषि या केवल एक साधक ने ही स्वीकार नहीं किया है, अपितु जिन जिन योगियों या महर्षियों ने इस साधना को सम्पन्न किया है उन्होंने यह अनुभव किया है कि यदि साधक अपने जीवन में इस साधना को सम्पन्न नहीं करता, तो वह जीवन ही

बेकार चला जाता है। उसके जीवन में कोई रस नहीं रहता, और यदि सिद्धाश्रम के द्वारा वरिणत इस सिद्धि दिवस का उपयोग नहीं किया जाता, तो ऐसा महत्वपूर्ण दिन वापिस एक पूरे वर्ष के बाद ही प्राप्त हो सकता है।

यों तो तांत्रिक ग्रन्थों में बताया जाता है, कि भुवनेश्वरीं साधना को किसी भी गुरूवार से प्रारम्भ की जा सकती है, पर यदि भुवनेश्वरी सिद्धि दिवस का ही उपयोग किया जाय तो सिद्धि मिलने में ज्यादा सुविधा एवं ग्रनुकूलता प्राप्त होती है।

यों तो भुवनेश्वरी साधना की अनेक विधियां शास्त्रों में प्रचलित है, पत्रिका के पिछले अंकों में भी हमने मंत्रात्मक दृष्टि से भुवनेश्वरी साधना का विस्तार से विवरण दिया था, और उस प्रकार से साधना सम्पन्न कर सैकड़ों साधकों ने लाभ उठाया भी है, परन्तु इस बार सर्वथा गोपनीय, महत्वपूर्ण ग्रौर दुर्लभ साधना प्रयोग दे रहे है। जो कि अपने ग्राप में "तंत्रात्मक प्राणस्वरूपा भुवनेश्वरी साधना" कहा जाता है।

कहते हैं, कि इस प्रयोग को प्राप्त करने के लिए वशिष्ठ को स्वयं ग्रपने पैरों से चल कर विश्वामित्र के द्वार तक जाना पड़ा ग्रौर इसे प्राप्त करने के लिए शिष्यता भी स्वीकार करनी पड़ी।

तंत्रात्मक भुवनेश्वरी साधना

इस दुर्लभ भुवनेश्वरी प्रयोग को महर्षि विश्वामित्र ने ग्रपने योग बल से प्राप्त किया था, और उन्होंने इसे "भुवनेश्वरी पंजर सिद्धि" के शब्द से सम्बोधित किया है, पंजर का तात्पर्य है, चारों तरफ से रक्षा करने वाला प्रयोग। जिस प्रकार कोई पक्षी पिंजरे में बैठ जाता है, तो वह चारों तरफ से सुरक्षित रहता है, बिल्ली आदि किसी प्रकार का ग्रन्य प्राणी उसको हानि नहीं पहुँचा सकता। उसी प्रकार से यह प्रयोग भी पूर्णतः पंजर है, जिससे कि इस साधना को सिद्ध करने वाले साधक को किसी प्रकार की हानि नहीं होती ग्रौर वह निश्चिन्तता से आगे बढ़ता हुग्रा साधना को पूर्ण कर लेता है।

इस साधना की दूसरी विशेषता यह है, कि ग्रन्य प्रकार से साधनाएं करने पर भले ही असफलता मिल जाय, परन्तु यह साधना प्रयोग ग्रपने आपमें अचूक है, अभेद्य है, इस प्रकार से भुवनेश्वरी तांत्रिक प्रयोग करने पर साधक को निश्चय ही सिद्धि ग्रौर सफलता मिलती है और ऊपर भुवनेश्वरी साधना के जो लाभ बताये है, वह साधक को स्वतः प्राप्त होने लगते है।

यह प्रयोग अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रहा है, कहते है, कि इस प्रयोग को प्राप्त करने के लिए वशिष्ठ को स्वयं अपने पैरों से चल कर विश्वामित्र के द्वार तक जाना पड़ा और इसे प्राप्त करने के लिए शिष्यता भी स्वीकार करनी पड़ी। इस प्रयोग को प्राप्त करने के बाद वशिष्ठ ने कहा—"मैं यदि अपना पूरा जीवन भी दाव पर लगाकर इस विद्या को प्राप्त कर लेता तो भी यह सौदा महंगा नही था"।

गुरु गोरखनाथ तो इस विद्या के अन्यतम ग्राचार्य थे ग्रौर उन्होंने ग्रपने ज्ञान बल से विश्वामित्र की आत्मा को ग्रपने सामने प्रतिष्ठित कर उनसे ही यह दुर्लभ भुवनेश्वरी पिंजर" प्रयोग प्राप्त किया, और उसके बाद ही यह साधना प्रयोग उनके शिष्यों के द्वारा जनसाधारण में प्रचलित हुग्रा, फिर भी यह साधना रहस्य गोपनीय बना रहा, क्योंकि गुरू ग्रपने शिष्य को कण्ठस्थ करा देता, और इसी प्रकार यह विद्या आगे बढ़ती रही।

गोरखनाथ की परम्परा में ही योगी अवधुत हुए

जिन्होंने इस दुर्लभ साधना प्रयोग को अपने गुरु से प्राप्त कर ताड़ पत्रों पर अंकित किया, जिससे कि यह सुलभ हो सका।

वास्तव में ही प्रयोग अत्यन्त सरल और संक्षिप्त होते हुए भी पूर्ण एवं प्रभावशाली है। जो साधक इस साधना प्रयोग को सम्पन्न करता है, वास्तव में ही वह जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर लेता है।

"मैं यदि अपना पूरा जीवन दाव पर लगा कर इस विद्या को प्राप्त कर लेता तो भी यह सौदा महंगा नहीं था"।

सविधि तांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना रहस्य

साधक प्रात: काल उठ कर स्नान संध्या आदि से निवृत्त हो कर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाय, इस साधना में सफेद ऊनी आसन या मृग चर्म का प्रयोग किया जाना चाहिए। साधक स्वयं सफेद धोती धारण करे, साधिका यदि इस साधना को सम्पन्न करना चाहें तो सफेद साड़ी पहिने, प्रात: काल अपने सिर के बाल धो ले और बिना तेल लगाये बालों को खुला रखे।

इसके बाद साधक अपने सामने "तांत्रोक्त सिद्ध भुवनेश्वरी यंत्र" को स्थापित करें, जो कि महर्षि विश्वामित्र द्वारा प्रणीत प्राण संजीवनी मुद्रा से सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो। वास्तव में ही इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठित यन्त्र ही प्रयोग में लाया जा सकता है, यद्यपि इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठा करना अत्यन्त कठिन कार्य है, और बहुत कम पंडित ही इस प्रकार के यन्त्र को प्राण प्रतिष्ठित एवं मन्त्र सिद्ध कर पाते है, पर ऐसा यंत्र कई कई पीढ़ियों के लिए साधक के लिए लाभ दायक बना रहता है।

अपने सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछाएं और उस पर थाली रखे, थाली के चारों कोनों पर कुंकुम से पंच कोण बनावे और थाली के मध्य में त्रिकोण अंकित करे। इसके बाद थाली के मध्य में ही इस प्रकार का मन्त्र सिद्ध यन्त्र स्थापित करे, और उसे 'ॐ भुवनेश्वर्यै नम:' मन्त्र का उच्चारण करते हुए शुद्ध जल से स्नान करावे, इसके बाद इसी नाम का उच्चारण करता हुआ, उसे दूध से, दही से, घृत से मधु से, और शर्करा से स्नान करावे, फिर इन पांचों चीजों को मिला कर पंचामृत से स्नान करावे, स्नान कराते समय बराबर इसी मंत्र का उच्चारण करता रहे। इसके बाद पुन: शुद्ध जल से यंत्र को स्नान करा कर अलग किसी पात्र में रख दें, और उस पात्र का जल अलग कटोरे में ले कर एक तरफ रख दें, जिसे पूजा समाप्त होने के बाद जमीन में गाड़ दें।

इसके बाद उस थाली को मांज कर पोंछ कर सिन्दूर से मध्य में पंच कोण बनावे और थाली के अन्दर ही चारों कोनो पर सिन्दूर से ही त्रिकोण अंकित करे और मध्य में चावल की ढेरी बना कर उस पर यंत्र को स्थापित करे।

इसके बाद यंत्र पर सिन्दूर से ही दस बिन्दियां लगावे और यंत्र पर अक्षत तथा पुष्प चढ़ाने के बाद सुगन्धित पुष्पों की माला यंत्र पर अर्पित करे।

इसके बाद सामने अगरबत्ती के शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करें और यंत्र पर जहां दस स्थानों पर सिन्दूर की दस बिन्दियां लगाई थी, वहां से थोड़ा थोड़ा सिन्दूर लेकर अपने ललाट के मध्य में तिलक करे।

इसके बाद थाली में जो चारो कोनों पर त्रिकोण बनाये है, उनमें से प्रत्येक त्रिकोण पर छोटी छोटी चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक पर एक एक लघु नारियल

स्थापित करे, और लघु नारियल पर सिन्दूर का तिलक करे। यंत्र के सामने दस हकीक नग पत्थर रख दे, जो कि मंत्र सिद्ध हो, और प्रत्येक हकीक नग पर सिन्दूर का तिलक करे, यह दस महा शक्तियों के प्रतीक चिन्ह है। इसके बाद यंत्र के बांई ओर चावल की ढेरी बनाकर "मोती शंख" स्थापित करें और दाहिनी ओर चावल की ढेरी बना कर "सिद्धि फल" स्थापित करें। फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, सिन्दूर का तिलक करे और पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद यंत्र के सामने दूध का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें तथा एक पात्र में पंचामृत बना कर रखें (पंचामृत दूध, दही घी, शहद और शक्कर को मिला कर बनाया जाता है) इसके पास ही पानी से भरा हुआ, लोटा रख दें, और फिर प्रयोग प्रारम्भ करें।

भुवनेश्वरी तांत्रोक्त सपर्या प्रयोग

साधक सबसे पहले अपनी चोटी के गांठ लगावे, अपने अंगूठे से अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक करे, और फिर सिन्दूर का तिलक अपने सिर के मध्य भाग में हृदय पर तथा नाभि पर भी करें। इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी पंजर मंत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री भुवनेश्वरी देवता। हं बीजं। ईं शक्तिः। रं कीलकं। सकल-मनो-वांछित-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः॥

ऐसा कह कर हाथ मे लिया जल जमीन पर छोड़ दे और इसके बाद न्यास करे।

ऋष्यादि न्यास

श्री शक्ति-ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री-छन्दसे नमः मुखे।
श्री भुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि
हं बीजाय नमः गुह्ये।
ईं शक्तये नमः नाभौ।
रं कोलकाय नमः पादयोः।
सकल-मनो-वांछित-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

न्यास का तात्पर्य है कि इसमें शरीर के जिन जिन अंगो का वर्णन आया है, साधक मंत्र का उच्चारण करते हुए शरीर के उस उस अंग को दाहिने हाथ से स्पर्श करे, जिससे कि भगवती भुवनेश्वरी पूर्ण रूप से शरीर के सभी अंगो में समाहित हो सके।

इसके बाद साधक षडंग न्यास करे।

षडंग न्यास

षडंग न्यास	अंग-न्यास	कर-न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
"	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
"	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
"	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
"	कनिष्ठकाभ्यां वषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
"	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार से न्यास करने के बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करे।

ध्यान

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृत-जनि-जननी योगिनीं योग-योनिम्।
देवानां जीवनायोज्ज्वलित-जय-परं ज्योतिरूपांग-धात्रीम्।
शंख चक्रं च बाणं मनुरपि दधतीं दोश्चतुष्का-म्बुजातैः।
मायामांद्यां विशिष्टां भव-भव-भुवनां भू-भवा भार-भूमिम्॥

ध्यान करने के बाद साधक सफेद स्फटिक माला से वहीं पर बैठे बैठे निम्न दुर्लभ गोपनीय मंत्र की २१ माला मंत्र जप करें।

भगवती भुवनेश्वरी तांत्रोक्त पिंजर महामंत्र

ॐ क्रों श्रीं ह्रीं ऐं सौं ह्रीं नमः

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक दस बत्तियां लगा कर भगवती भुवनेश्वरी की आरती सम्पन्न करे, या जगदम्बा या दुर्गा की आरती स्मरण हो तो उसे करे, इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी के सामने जो प्रसाद चढ़ाया हुआ हैं, वह थोड़ा सा स्वयं भक्षण करे. और अपने परिवार वालों को बांटे।

महर्षि अगस्त्य ने तो भुवनेश्वरी के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की हैं, महर्षि अगस्त्य ही नहीं अपितु विश्वामित्र, कणाद, स्वामी शङ्कराचार्य, योगाचार्य और गुरू गोरखनाथ तक ने यह स्वीकार किया है, कि भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता एक मात्र भुवनेश्वरी साधना से ही संभव है।

इसके बाद पूर्ण सिद्धि के लिये किसी पात्र में समिधाये (लकड़ियां) जला कर इसी मंत्र की पूरी एक सौ आहुतियां दे दें तब यह प्रयोग पूर्ण माना जाता है।

भुवनेश्वरी यंत्र के आस पास जो लघु नारियल आदि सामग्री है, उसे एक सफेद रेशमी वस्त्र में बांध कर घर के भण्डार गृह में या जहां धनराशि आदि रखी जाती है, अथवा तिजोरी में सम्मानपूर्वक स्थापित कर दें और यंत्र को पूजा स्थान में सफेद रेशमी वस्त्र बिछाकर स्थापित करे।

इसके बाद यदि श्रद्धा हो तो एक ब्राह्मण को या एक कुंवारी कन्या को भोजन करा दें, अथवा मन्दिर में दान दक्षिणा आदि भिजवा दें।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है अपने आप में यह महत्वपूर्ण और दुर्लभ और गोपनीय प्रयोग हैं। पत्रिका पाठकों के लिए यह दिन वरदान स्वरूप है, उन्हें चाहिए कि वे इस दिन का उपयोग करते हुए, भगवती भुवनेश्वरी की इस दुर्लभ गोपनीय साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न करे।

स विधि

श्री पदमावती सिद्धि प्रयोग

(५-१२-८६)

जब कुबेर ने भगवान शिव की हजारों वर्ष तक तपस्या की और जब भगवान शिव प्रत्यक्ष प्रकट हुए तो कुबेर ने उनके सामने अपनी इच्छा प्रकट की, कि मैं जीवन में इतना अधिक धन, द्रव्य, भोग और ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहता हूं जितना संसार में किसी के पास न हो।

तब भगवान शिव ने कुबेर को अपना शिष्य बना कर उसे श्री पदमावती सिद्धि प्रयोग समझाया जो कि सर्वथा रहस्यमय और गोपनीय था। इस साधना को सम्पन्न कर कुबेर देवताओं के कोषाधिपति बन सके।

"विश्व सार तंत्र के अनुसार" ऐसा प्रयोग न जीवन में बन सका है, और न भविष्य में बन सकेगा, यदि सारे तंत्रों का निचोड़ निकाला जाय तो भी यह तंत्र प्रयोग सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय कहा जा सकता है।

पदमावती सिद्धि दिवस के अवसर पर मैं विश्व सार तंत्र में वर्णित उस दुर्लभ प्रयोग को पाठकों के लिये प्रस्तुत कर रहा हूं जो कि सर्वथा गोपनीय तो रहा ही है, पर जिसे भगवान शिव ने स्वयं कुबेर को बताया था।

वास्तव में ही पदमावती धन धान्य, ऐश्वर्य एवं अतुल सम्पदा की देवी है, भगवती लक्ष्मी स्वयं इसकी मात्र अंशी भूत स्वरूपा है, इसीलिए शास्त्रों में पदमावती साधना को अत्यन्त श्रेष्ठतम महत्व दिया है।

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार प्रत्येक वर्ष मार्ग शीर्ष शुक्ल ७ तदनुसार ५-१२-८९ को 'पदमावती सिद्धि दिवस" है जिस दिन प्रत्येक साधक, साधना कर अपने जीवन में पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकता है।

तांत्रोक्त प्रयोग

इस बार पत्रिका के इन पन्नों पर पर मैं पदमावती के उस दुर्लभ तांत्रोक्त प्रयोग को स्पष्ट कर रहा हूं जो कि निश्चय ही अब तक गोपनीय रहा है। तांत्रोक्त प्रयोग की यह विशेषता होती है कि उसमें मंत्र जप तो होता ही है, पर क्रिया पद्धति मुख्य रूप से महत्व रखती है, तंत्र में केवल मंत्र जप ही पर्याप्त नहीं होता, अपितु उसमें जिन साधनाओं और उपकरणों की आवश्यकता होती है, उनका प्रयोग भी आवश्यक माना जाता है।

यह पदमावती प्रयोग भी तांत्रोक्त पद्धति है, यदि मैं सत्य कहूं तो वास्तव में ही इसके समान आर्थिक उन्नति प्रदान करने वाला अन्य कोई प्रयोग इस संसार में नहीं है जिस प्रयोग से दरिद्र कुबेर अतुलनीय सम्पदा के स्वामी हो सके, जिस प्रयोग से विश्वामित्र सर्वश्रेष्ठ धनाधिपति हो सके, जिस प्रयोग से वशिष्ठ ने इतनी क्षमता प्राप्त करली, कि वह दशरथ जैसे प्रतापी राजा को कर्ज दे सके जिस प्रयोग से गुरू गोरखनाथ लाखों शिष्यों का नित्य भण्डारा करने में समर्थ हो सके, और जिस प्रयोग से स्वामी शंकराचार्य ने स्वर्ण वर्षा कर के बता दिया, वह प्रयोग किस प्रकार से कमजोर हो सकता है।

एक नहीं सैंकड़ो तांत्रिकों ने पदमावती प्रयोग को जीवन का अद्वितीय खजाना कहा है, जिन जिन योगियों ने, साधकों ने या व्यक्तियों ने यह साधना सम्पन्न की है, उन लोगों ने स्वीकार किया है कि यह साधना सिद्ध होते होते धन धान्य की वर्षा होने लगती है, कई गुना व्यापार बढ़ जाता है, रुके हुए पैसे प्राप्त होने लग जाते है, और अनायास ही भाग्योदय हो जाता है, ऐसा लगता है कि जैसे लक्ष्मी स्वयं घर में आ कर बैठ गई हो।

भगवान शिव ने स्वयं पार्वती को इस प्रयोग का रहस्य बताते हुए कहा है, कि यह प्रयोग हमेशा गुप्त रखना चाहिए, इसके माध्यम से जिस प्रकार से धन की वर्षा होती है, उससे व्यक्ति को भ्रमित न हो कर, स्वयं के जीवन को तो सुखमय बनाना ही चाहिए, दान, पुण्य आदि करके भी समाज में यश और सम्मान प्राप्त करना चाहिए।

विश्व सार तंत्र के अनुसार

विश्व सार तंत्र में इस प्रयोग से संबंधित कुछ हिदायतें दी है, जिनका प्रयोग साधक को करना चाहिए, वे निम्न प्रकार से है-

१– पदमावती प्रयोग, पदमावती दिवस के दिन अथवा किसी भी शनिवार या मंगलवार से प्रारंभ किया जा सकता है। यदि पदमावती दिवस के दिन इस प्रयोग को किया जाता है, तो एक ही दिन में प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, पर यदि इस दिन के अलावा अन्य किसी मंगलवार या शनिवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाता है तो पांच दिन तक यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

२– यह प्रयोग घर के किसी अलग कमरे में करे, पर इस बात का ध्यान रखे कि जब तक प्रयोग सम्पन्न हो तब तक उस कमरे में अन्य कोई न जाए, अथवा यह प्रयोग एकांत स्थान में नदी के किनारे अथवा शून्य स्थान पर करे, जहां पर लोगों का आना जाना नहीं के बराबर हो।

३– प्रयोग प्रारम्भ करने के एक दिन पहले घर में किसी कुवारी कन्या जिसकी आयु ग्यारह वर्ष से बड़ी न हो, और जो अभी रजस्वला न हुई हो, उसे घर में बुला कर उसका संक्षिप्त पूजन करे, उसे भोजन करावे और यथोचित वस्त्र आदि भेंट स्वरूप दें।

४- यह प्रयोग या तो ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात सुबह चार बजे के आस पास से प्रारम्भ करे या रात्रि में यह प्रयोग सम्पन्न करे, जिस समय सर्वथा एकांत हो, और लोगों का शोरगुल न हो।

५- यह प्रयोग सम्पन्न करने के बाद किसी ब्राह्मण को घर में बुला कर घी और गुड़ से बने हुए पुवे आदि का भोजन करावे अथवा मन्दिर में घी और गुड़ चढ़ा दें फिर भी इस विश्व सार तंत्र में बताया हैं, कि घर में ब्राह्मण को बुलाकर भोजन कराना ज्यादा श्रेष्ठ है।

६- यदि यह प्रयोग लगातार तीन दिन कर दें, तो वह सभी शास्त्रों का ज्ञाता और भगवती पदमावती के पुत्र के समान होता है।

७- यदि इस प्रयोग को पूरे पांच दिन सम्पन्न किया जाय और अपने सामने गुरूदेव का चित्र स्थापित कर उन्हें साक्षात् शिव और उनकी पत्नी को साक्षात् पार्वती मान कर अभेद भाव से इस मन्त्र का जप पांच दिन तक करे तो वह समस्त प्रकार की सम्पत्ति निश्चय ही प्राप्त करता है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि विश्व सार तंत्र के अनुसार साधक पदमावती सिद्धि दिवस को एक दिन तो प्रयोग करे ही, पर वह चाहे तो पदमा-वती दिवस से आगे तीन दिन या पांच दिन तक भी प्रयोग कर सकता है।

इस प्रकार का प्रयोग चलते समय, यदि साधक दिन को या रात्रि को कोई दूसरा प्रयोग भी हाथ में लिया हुआ हो तो उसे भी सम्पन्न कर सकता है, इसमें कोई बाधा नही है।

८- इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर धन धान्य की वृद्धि तो निरन्तर होती ही है, आर्थिक रूप से वह अत्यन्त समृद्ध तेजस्वी और सौभाग्यशाली भी बन जाता है, ऐसे साधक के समस्त पाप कट जाते है, उसका दुर्भाग्य समाप्त हो जाता है।

९- यदि पुष्य नक्षत्र में इस मंत्र को गोरोचन से लिख कर कांच में मंढ़वा कर दुकान में या घर में रख दें तो निरन्तर उन्नति होती रहती है।

१०- यदि एक कागज पर पुष्य नक्षत्र के दिन यह मंत्र लिख कर उसे गेहूं के आटे में मसल कर उसकी छोटी छोटी गोलियां बना कर मछलियों को वे गोलियां खिला दी जाय तो वशीकरण सिद्ध हो जाता है, उसके चेहरे पर एक विशेष प्रकार की सम्मोहन शक्ति आ जाती है, और वह सर्वत्र विजयी होता है।

११- यदि मंगलवार के दिन किसी कागज पर इस मन्त्र को लिख कर उसके नीचे शत्रु का नाम लिख कर जमीन में गाड़ दें या श्मशान में जा कर उस कागज को जला दें तो शत्रु का मारण निश्चित रूप हो जाता है।

१२- यदि पुष्य नक्षत्र के दिन भोज पत्र पर गौरोचन से मन्त्र को लिख कर उसे मसल कर उसे दूध बने से हुए पेडे या प्रसाद में मिला कर जिसको भी वह प्रसाद खिला दिया जाता है, वह निश्चित रूप में वश में हो जाता हैं और जीवन भर गुलाम की तरह कार्य करता है।

१३- यदि रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो, और गोरो-चन से इस मंत्र को कागज पर लिख कर कार्यालय में अथवा फैक्टरी में वह मंढ़वा कर लटका दिया जाय तो कर्मचारियों की समस्या समाप्त हो जाती है, उस फैक्टरी में हड़ताल नहीं होती और किसी प्रकार की बाधा या अड़चन उपस्थित नहीं होती।

१४- यदि इस मन्त्र को पुष्य नक्षत्र के दिन भोज पत्र पर लिख कर अपने घर के भण्डार गृह में रखे, तो उसके घर में निरन्तर उन्नति होती रहती है।

Nov 89 पद्मावती सिद्धि प्रयोग

पर इन सब के लिए आवश्यक है, कि साधक पहले इस पदमावती साधना को सिद्ध करे, तभी उसे उपरोक्त लाभ प्रतीत होते है।

पदमावती प्रयोग

इस साधना को पुरूष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, पर रजस्वला स्त्री को उन दिनों में यह प्रयोग सम्पन्न नहीं करना चाहिए, इसी प्रकार पुरूष को साधना काल में भूमि शयन करना चाहिए ब्रह्मचर्य का पूरा पालन करना चाहिए।

पदमावती महायंत्र

विश्व सार तंत्र के अनुसार इस साधना का प्रमुख भाग पद्मावती महायंत्र है, जो कि धातु निर्मित हो और विश्व सार तंत्र के अनुसार ही मंत्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

विश्व सार तंत्र में इस महायंत्र को सिद्ध करने की गोपनीय विधि स्पष्ट की हैं, जो कि अत्यन्त जटिल, कठिन और श्रम साध्य है, उसमें बताया गया है, कि इस महायन्त्र को "वाग्भव" बीज से सम्पुटित कर "लज्जा" बीज से युक्त कर "रमा" बीज से कीलक कर "काम" बीज से सिद्ध करना चाहिए, तभी यह यंत्र सिद्ध होता है, और ऐसा ही महायत्र साधक के लिए उपयोगी होता है।

साधक को चाहिए कि वह इस प्रकार का अद्वितीय महायन्त्र सम्पन्न कर ले, या किसी योग्य पंडित से तैयार करवा ले अथवा समय रहते पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर इस प्रकार का महायंत्र प्राप्त कर ले, क्योंकि इस प्रकार के महायंत्र को सिद्ध करना कठिन है, और ऐसे बहुत ही कम महायंत्र सिद्ध हो सकते है।

साधना प्रयोग

जब साधक विश्व सार तंत्र के अनुसार तांत्रोक्त पदमावती साधना सम्पन्न करना चाहें तो वह या तो प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात चार बजे के आस पास साधना प्रारम्भ करे या रात्रि को ९ बजे के बाद इस साधना को सम्पन्न करे।

साधक स्नान कर अपने पूजा स्थान में सफेद ऊनी आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने पूज्य गुरूदेव का सुन्दर चित्र स्थापित कर दें, यदि वह गुरूमाता और गुरूदेव दोनों का चित्र प्राप्त कर साधना स्थल पर स्थापित करे तो ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, इन दोनों को भगवान शिव और साक्षात् पार्वती समझ कर मन ही मन बिना किसी संशय के अभेद भाव से उन्हें शिव पार्वती मान कर उनकी पूर्ण पूजा करे, पूजा में चित्र को स्नान करावे, फिर उसे पोंछ कर केसर का तिलक करे, सामने अगरबत्ती लगावे, घी का दीपक प्रज्वलित करें, और सुन्दर पुष्पों का हार चित्र को पहनावे इसके बाद गुरू मंत्र की एक माला मन्त्र जप करे, और गुरू आरती पूर्ण भक्ति भाव से सम्पन्न करें. यह इस प्रयोग में आवश्यक है।

इसके बाद एक थाली में केसर से स्वस्तिक का चिन्ह बना कर उसमें इस दुर्लभ 'पदमावती महायंत्र' को स्थापित करें, और उसे दूध, दही, घी, शहद, और शक्कर से स्नान कराने के बाद पंचामृत से स्नान करावे, और फिर शुद्ध जल से धो कर पोंछ कर किसी दूसरी थाली में केसर का स्वस्तिक बना कर उसमें इस यंत्र को स्थापित करें।

तत्पश्चात् यंत्र की संक्षिप्त पूजा करे, केसर का तिलक लगावे अक्षत अबीर गुलाल तथा पुष्प समर्पित करे, सामने दूध का बना हुआ नैवेद्य चढ़ावे और शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करें।

इसके बाद इस पदमावती महायंत्र के ऊपर 'वागभव यंत्र' को स्थापित करे, यंत्र के बांई ओर 'लज्जा यंत्र' स्थापित करे, यन्त्र के दाहिनी ओर 'लक्ष्मी यन्त्र' स्थापित करे और यंत्र के नीचे की ओर 'काम यंत्र' स्थापित करें। इस प्रकार इस यन्त्र के चारों तरफ ये चार यंत्र स्थापित करने आवश्यक माने गये है, इनमें चारों ही यंत्र अपने आपमें अत्यन्त दुर्लभ और मन्त्र सिद्ध होने चाहिए, साथ ही साथ ये प्राण प्रतिष्ठा युक्त होने चाहिये जिससे साधक को तुरन्त अनुकूलता प्राप्त हो सके।

विनियोग

इसके बाद हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक गौत्र, अमुक पिता का, अमुक नाम का साधक पूर्ण पदमावती साधना को सिद्ध करना चाहता हूं और ऐसा कहते हुए जल किसी पात्र में छोड़ दें।

इसके बाद पुनः हाथ जल ले कर विनियोग करें—

ॐ अस्याश्चतुरक्षरी-विष्णु-वल्लभाया: मंत्रस्य श्री भगवान् शिव ऋषि:, अनुष्टुप् छन्द:, वाग्भवी शक्ति: देवता, वाग्भवं (ऐं) बीजं, लज्जा (ह्रीं) शक्ति:, रमा (श्रीं) कीलक, काम-बीजात्वकं (क्लीं) कवच, मम सु-पाण्डित्य-कवित्व-सर्व-सिद्धि-समृद्धये मंत्र जपे विनियोग।

विनियोग के बाद कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जाप करें, इसमें कमल गट्टे की माला का ही प्रयोग होता है, जो कि मंत्र सिद्ध होनी चाहिए।

पद्मावती मूल मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक विश्राम करे, यदि साधक चाहे तो इसके बाद पदमावती स्तोत्र का पाठ कर सकता हैं, यद्यपि इस साधना में यह अनिवार्य नहीं है, फिर भी इस स्तोत्र की भी तांत्रिक क्षेत्र में अत्यन्त महत्ता है।

मैं केवल साधकों की जानकारी के लिए ही इस स्तोत्र को आगे की पंक्तियों में दे रहा हूं, यद्यपि मंत्र जाप सम्पन्न करने पर उस दिन की साधना पूर्ण मानी जाती है।

पद्मावती स्तोत्र

ऐंकारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्व-सिद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुर्वोर्मध्ये चक्षु-युग्मे च शांकरी ।।१।।

जिह्वायां मुख – वृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्मपि।
आष्ठाधरो दन्त-पंक्ती तालु-मूले हन पुन: ।।२।।

पातु मां विष्णु-वनिता लक्ष्मोः श्री विष्णु-रूपिणी ।
कर्ण-युग्मे भुज द्वन्द्वे स्तन द्वन्द्वे च पार्वती ॥३॥

हृदये मणि-बन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः ।
पृष्ठ-देशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा ॥४॥

उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघा-द्वये पुनः ।
जानु - चक्रे पद - द्वन्द्वे घटिके ऽगुलि - मूलके ॥५॥

स्वधा तु प्राण शक्त्या वा सीमन्ते मस्तके तथा ।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः ॥६॥

पुष्टिः पातु महा माया उत्कृष्टिः सर्वदा वतु ।
ऋषिः पातु सदा देवी सर्वत्र-शम्भु-वल्लभा ॥७॥

वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर-गेहिनी ।
रमा पातु महा-देवी, पातु माया स्वराट् स्वयं ॥८॥

सर्वांगे पातु मां लक्ष्मी विष्णु-माया सुरेश्वरी ।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ॥९॥

शिव-दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा ।
भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदा वतु ॥१०॥

त्वरिता पातु मां नित्यमुग्र-तारा सदा वतु ।
पातु मां कालिका नित्यं काल-रात्रिः सदा वतु ॥११॥

नव-दुर्गाः सदा पान्तु कामाख्या सर्वदा वतु ।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम ॥१२॥

मातरः पान्तु देव्यश्च चक्रस्था योगिनी-गणा ।
सर्वत्र सर्व - कार्येषु सर्व - कर्मसु सर्वदा ॥१३॥

पातु मां देव-देवी च लक्ष्मीः सर्व समृद्धि दा ।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्व-सिद्धये ॥१४॥ ★

p-36

(1)

Nov-89

तन्त्र साधना की पीठ पद्धति

बगलामुखी सिद्धि

३१-१२-८९

बगलामुखी का शुभ नाम "वल्गा मुखी" है, जिस प्रकार से हम घोड़े के मुंह पर लगाम लगा कर उसे नियन्त्रण में रखते हैं उसी प्रकार से वल्गामुखी के द्वारा समस्त शत्रुओं के मुंह पर लगाम लगाते हुए उन्हें अपने नियन्त्रण में रख पाते हैं।

तांत्रोक्त साधना में बगलामुखी की कई विधियां प्रचलित हैं, पर बगला-मुखी के सिद्धतम आचार्य मत्स्येन्द्र नाथ थे, जिन्होंने पीठ पद्धति से बगलामुखी सिद्ध कर यह बता दिया था, कि इसके माध्यम से असम्भव कार्यों को भी संभव किया जा सकता है।

आगे की पंक्तियों में, जगत् गुरू मत्स्येन्द्र नाथ द्वारा प्रणीत बगलामुखी साधना की पीठ पद्धति स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि पूरे संसार में पहली बार प्रकाशित हो रही है।

यह महत्वपूर्ण नहीं है, कि बगलामुखी साधना सिद्ध की जाय, महत्वपूर्ण तो यह है कि उसे किस उपाय या किस विधि से सिद्ध की जाती है, 'तोड़ल तंत्र' में बतलाया है, कि दस महाविद्याओं में बगला मुखी सर्वश्रेष्ठ महाविद्या है, जो कि साधक को समस्त प्रकार से पूर्णता देने में सहायक है।

Nov-89
तन्त्र साधना श्री पीठ पद्धति
बगलामुखी सिद्धि

"प्रपंच सार तंत्र" में बगला मुखी साधना के बारे में बताया है, कि यह साधना तांत्रोक्त पद्धति से ही सिद्ध की जानी चाहिए, जिससे कि इसके माध्यम से साधक को पूर्ण सफलता और सिद्धि प्राप्त हो सके।

'रुद्रयामल तंत्र' में स्पष्ट रूप से बताया है कि बगला मुखी साधना की पीठ पद्धति अपने आपमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है जिसे महायोगी राज जगद्गुरू मत्स्येन्द्र नाथ ने योग विद्या से स्वयं भगवती बगला मुखी को अपने सामने प्रत्यक्ष कर उसकी गोपनीय विधि और रहस्य प्राप्त किया था।

कहते है, कि मत्स्येन्द्र नाथ को पीठ पद्धति के द्वारा जब बगला मुखी सिद्ध हुई तो वह नित्य मत्स्येन्द्र नाथ के सामने आकर उपस्थित होती और मत्स्येन्द्रनाथ स्वयं उसे अपने हाथों से भोजन कराते।

जगद्गुरू मत्स्येन्द्रनाथ ने ताड पत्रों पर वल्गा सिद्ध साधना पद्धति पर एक ग्रन्थ लिखा है, जो आज भी तांत्रिक क्षेत्र में अद्वितीय ग्रन्थ माना जाता है, इस महा-विद्या को सिद्ध करने के लिए इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और कोई ग्रन्थ नहीं है। यह ग्रन्थ पूर्णतः गोपनीय और दुर्लभ रहा, तिब्बत के मठों में जरूर इसकी प्रतिलिपि प्राप्त है, और जब राहुल सांकृत्यायन तिब्बत गये और उन्होंने तिब्बत के मठों में भारतीय तांत्रिक ग्रन्थों की खोज की तो उन्हें स्वामी मत्स्येन्द्र नाथ लिखित उपरोक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि देखने को मिली, वे चाहते थे, कि इस दुर्लभ ग्रन्थ की प्रतिलिपि भारतवर्ष पहुँच जाय परन्तु वे अपने प्रयास में असफल ही रहे।

तिब्बत के कई लामा इसी पीठ पद्धति से बगला मुखी को सिद्ध कर अद्वितीय आचार्य और सिद्ध योगी बने है। सपर्या तंत्र में बौद्ध लामा ने पीठ पद्धति के द्वारा मत्स्येन्द्रनाथ बगला मुखी साधना के निम्न आठ लाभ या प्रयोग बताये है जो कि अपने आप में अद्वितीय है। आज भी ये लामा इसी पद्धति से साधना सिद्ध कर इन सिद्धियों को प्राप्त करते है।

बगला मुखी साधना के लाभ

सपर्या तंत्र में लिखित बौद्ध याचमी के अनुसार गुरू मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत बगला मुखी साधना सिद्ध करने पर निम्न लाभ स्पष्ट प्राप्त होते है, और इन लाभों का प्रयोग या उपयोग साधक कभी भी सम्पन्न कर सकता है।

१- इस प्रकार की साधना सिद्ध करने पर साधक निश्चय ही अपने शरीर को वायु से भी शून्य कर आकाश में विचरण कर सकता हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकता है।

२- इस साधना के द्वारा साधक दुर्गम्य बर्फीले पहाड़ों पर नंगे पांव एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने पर उसे किसी प्रकार की कठिनाई या बाधा उपस्थित नहीं होती और वह निश्चिन्त निर्भीक हो कर पूरे संसार में कहीं पर भी विचरण करने में समर्थ होता है।

३- इस साधना को सिद्ध करने पर साधक मृत्यु पर पूर्णतः नियंत्रण प्राप्त कर लेता है, एक प्रकार से ऐसे व्यक्ति को 'इच्छा मृत्यु सिद्धि' पुरूष कहा जाता है, महा-भारत कालीन भीष्म पितामह ने यही साधना सिद्ध की थी, ऐसा कुछ ग्रन्थों में आलेख है।

४- इस साधना से साधक जीवन के किसी भी प्रकार के तत्वों पर पूर्णतः अधिकार रखता है, वह अकेला ही हजारों शत्रुओं पर भारी पड़ता है, उसका शरीर वज्र की तरह मजबूत और सुदृढ़ हो जाता है, फलस्वरूप उस पर किसी भी प्रकार का शस्त्र प्रहार नहीं हो सकता, यही नहीं अपितु शत्रु न तो उस पर हावी हो सकते है, न उसको पीड़ा पहुंचा सकते है, और न उसके लिए परे-शानी पैदा कर सकते है।

५- ऐसे साधक के चारों और सुदर्शन चक्र की तरह "वल्गा चक्र" घूमता रहता है, जो प्रत्येक प्रकार की आपत्ति और बाधाओं से उसे बचाता है, एक प्रकार से ऐसा चक्र चौबीसों घण्टे उसकी रक्षा करता रहता है,

वास्तव में ही ऐसा साधक इस संसार में अजेय माना जाता है।

६– ऐसे साधक को राज्य बाधा व्याप्त नहीं होती, आज के युग के संदर्भ में देखा जाय तो ऐसे साधक पर पुलिस, इन्कम टेक्स, या अन्य किसी भी प्रकार की राज्य बाधा नहीं आती, वह स्वतंत्र रूप से अपने व्यापार को सम्पन्न कर सकता हैं, जीवन में निरन्तर उन्नति कर सकता है, और आगे सफलताओं को प्राप्त करता हुआ इच्छा मृत्यु वरण कर सकता हैं।

उपरोक्त छः लाभों के अलावा भी ऐसा साधक समाज में पूजनीय और सम्माननीय होता है। ऐसे साधक के चेहरे पर एक विशेष प्रकार का ओज दिखाई देता है, जिसकी चका चौंध से उससे मिलने वाला व्यक्ति निस्तेज हो जाता है, ऐसे व्यक्ति के शरीर में कामदेव का निवास होता है, फलस्वरूप उसका व्यक्तित्व चुम्बकीय और आकर्षण युक्त बन जाता है, वह किसी को भी सम्मोहित करने की क्षमता रखता है, ऐसे साधक के जीवन में किसी प्रकार की कोई बाधा उपस्थित नहीं होती और वह सिद्ध योगी की श्रेणी में आता है। इस प्रकार की साधना सिद्ध करने पर साधक को जगद्गुरू मत्स्येन्द्रनाथ के साक्षात् दर्शन होते है और साधना सिद्ध करने के बाद गुरु मत्स्येन्द्र नाथ स्वयं उसे "बल्गा दीक्षा" प्रदान करते है।

वास्तव में हो बगला मुखी साधना जीवन की अद्वितीय और आश्चर्यजनक साधना है, हकीकत में देखा जाय तो भारतीय साधक अभी तक इसके महत्व और मूल्य को समझ नहीं सके है पर जिस दिन इस साधना की पीठ पद्धति समझ लेगे उस दिन पूरे भारतवर्ष में क्रांति सी आ जायेगी और साधक अपने जीवन मे जो भी और जिस प्रकार से भी चाहेगा, उस प्रकार से कार्य सम्पन्न कर सकेगा।

सिद्धाश्रम ने पौष शुक्ल ३ को "बगला मुखी सिद्धि दिवस" माना है, अंग्रेजी तारीख के अनुसार इस वर्ष ३१-१२-८९ को आता है, अतः भारत के प्रत्येक साधक को चाहिए कि वे इस साधना को इस महत्वपूर्ण दिवस पर अवश्य ही सम्पन्न करें।

यों तो तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार किसी भी रविवार या मंगलवार से इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है, परन्तु जिन साधकों के पास समय हो, वे बगला मुखी सिद्धि दिवस के दिन इस साधना को सम्पन्न करें। यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है। यह साधना दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है।

साधना प्रयोग

जिस दिन यह साधना प्रारम्भ करनी है, साधक उससे एक दिन पहले किसी पेड़ की हरी डाली लाकर अपने पूजा स्थान में स्थापित करदे, और उसके पास ही लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर ताबे का कलश स्थापित कर दें। इस कलश में पीपल या बड़ के पांच पत्ते रख कर, उसके ऊपर नारियल रखें, और फिर कलश को समुद्र का प्रतिनिधि मान कर उससे प्रार्थना करें कि मैं कल बगला मुखी साधना सिद्ध करना चाहता हूं, आप मेरे लिए सहायक हो इसी प्रकार किसी पात्र में मिट्टी का ढ़ेर बना कर उसमें हरे पेड़ की छोटी डाली लगा दें, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और कहे कि मैं इस अवसर पर समस्त संसार की बनस्पति को आमंत्रित करता हूं, कि वे मेरे जीवन को हरा भरा रखते हुए, मुझे अपने जीवन में पूर्णतः सफलता प्रदान करें।

इसके बाद जिस दिन साधना सम्पन्न करनी हो, उस दिन प्रातः काल साधक ब्रह्म मुहूर्त में ही उठ जाय, और सूर्योदय से पहले ही स्नान करके पूर्व दिशा की ओर मुंह कर संध्या प्राणायाम करें और गायत्री मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करें, इसके बाद हाथ में जल पात्र ले कर सूर्य उगने पर भगवान सूर्य को अर्घ्य दें, और फिर जहां अर्घ्य का जल गिरा है, उसकी सात प्रदक्षिणा करे, और भगवान से प्रार्थना करें, वे उसे तेज, बल, साहस और

शक्ति प्रदान करें, जिससे कि वह साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करें।

इसके बाद साधक पीली धोती पहिन कर पीले आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, इस साधना में पीले पुष्पों का ही प्रयोग होता है, साधना से दो दिन पहले ही रुई को पीले रंग में रंग कर उसे सुखा दें, और फिर उसकी वत्ती बना कर घृत का दीपक लगावे, यह सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक अर्थात चौबीस घण्टे अखण्ड दीपक जलता रहना चाहिए।

इसके बाद कांसी की थाली ले कर उसमें चांदी की शलाका से अष्ट गन्ध के द्वारा एक स्त्री का चित्र बनावे, जो कि खड़ी हुई हो, और जिसका एक पैर मनुष्य की छाती पर हो, और उसके हाथों में तलवार हों, चाहे चित्र अच्छा बने या गलत, इस बात की चिन्ता न करे. साधक चाहें तो पत्रिका कार्यालय से भगवती बगला मुखी देवी का चित्र प्राप्त कर सकता है, और उस चित्र को देख कर अष्ट गन्ध के द्वारा थाली में चांदी की शलाका से भगवती बगला मुखी का चित्र अंकन करें।

इसके बाद सामने लकड़ी के बाजोट पर इस थाली को स्थापित कर दें, और थाली के पीछे अपने गुरू का चित्र स्थापित करें, यदि गुरू स्वयं उपस्थित हो तो उनको सम्मान पूर्वक अपने पास बिठाये, यदि ऐसा न हो तो गुरू के चित्र को स्थापित करें, और उन्हें पूर्ण योगीराज मान कर उनकी विधि विधान के साथ पूजा करें, और गुरू आरती सम्पन्न करें।

पीठ पद्धति सिद्ध बगला मुखी यन्त्र

इसके बाद मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत पीठ पद्धति से युक्त भगवती बगलामुखी का ताम्र पत्र पर अंकित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महा यन्त्र उस थाली में स्थापित करें, यह यन्त्र आप पहले से तैयार करवा कर सिद्ध करवा सकते हैं, या पत्रिका कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

फिर "ॐ बगलामुखी देव्यै नमः" शब्द का उच्चारण करते हुए इस यन्त्र के ऊपर तीन 'गौरी शंकर रुद्राक्ष' स्थापित करें, बांये हाथ की ओर दो लघु 'नारियल' तथा दाहिने हाथ की ओर दो तांत्रिक नारियल स्थापित करें, यन्त्र के नीचे के भाग में तीन "त्रिरूप रुद्राक्ष" स्थापित करें।

इसके बाद एक अलग लकड़ी के बाजोट पर पीला कपड़ा बिछा कर उस पर सुपारी रख कर उसे महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, और उनका आह्वान कर निवेदन करें कि वे आ कर साधना में सिद्धि प्रदान करें।

इसके बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक गुरू आज्ञा से भगवान सूर्य या दीपक की साक्षी में मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत पीठ पद्धति से बगला मुखी साधना सिद्ध कर रहा हूं – ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल किसी पात्र में छोड़ दें।

विनियोग

इसके बाद दाहिने हाथ में जल ले कर निम्न विनियोग का उच्चारण करते हुए जल पात्र में छोड़े –

ॐ अस्य श्री बगलामुखी - मन्त्रस्य नारद-ऋषिः। त्रिष्टुप छन्दः। बगलामुखी देवता। ह्लीं बीजं। स्वाहा शक्तिः। मम शरीरे (यजमानस्य शरीरे वा) नाना-ग्रहोपग्रह-प्रयोग-ग्रह-प्रवेश-ग्रह-प्रयोग - सम्पूर्ण-रोग - समूह-वात्तिक-पैत्तिक-श्लैष्मिक-द्वन्द्वाजादि-नाना–दुष्टरोग-जन्मज–पातकजादि-शान्त्यर्थे सर्व-दुष्ट बाधा-कष्ट-कारक-ग्रहस्य उच्चाटनार्थे शीघ्रारोग्य-लाभार्थे एवं मम अन्य-अभीष्ट-कार्य-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक ऋष्यादि न्यास करें, इसमें जहां जहां पर शरीर के अंगों का वर्णन है, वहां वहां दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए उच्चारण करें –

ऋष्यादि न्यास

नारद-ऋषये नमः शिरसि
त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
बगलामुखी-देवतायै नमः हृदि।
ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तयै नमः पादयोः।

इसके बाद साधक निम्न प्रकार से न्यास करे, न्यास का तात्पर्य है कि शरीर के जिन अंगों का वर्णन विवरण है, उसे देखते हुए या स्पर्श करते हुए सम्बन्धित मन्त्र का उच्चारण करें।

न्यास

अंग न्यास	कर न्यास	हृदयादि न्यास
ॐ ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
बगलामुखी	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्व-दुष्टानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट
वाचं मुखं स्तम्भय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
जिह्वां कीलय कीलय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयायवौषट
बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

इसके बाद दोनों हाथों में पीले पुष्प और पीले अक्षत ले कर यन्त्र पर चढ़ाते हुए निम्न प्रकार से ध्यान करें।

ध्यान

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न वेद्यां,
सिंहासनोपरि-गतां परिपीत-वर्णाम्।
पीताम्बराभरण - माल्य - विभूषितांगीं,
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम्॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुन् परि-पीडयन्तिम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥

ऐसा करने के बाद साधक "मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत सिद्ध मूंगे की माला" से निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करें।

मत्स्येन्द्रनाथ सिद्ध मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं अमुक-साधक आवाहित सिद्ध सिद्धि देहि देहि आकर्षण सम्मोहन प्रदय प्रदय ह्लीं ॐ स्वाहा।

इसके बाद साधक किसी पात्र में या हवन कुण्ड में एक हजार आहुतियां दें, इसमें चन्दन, पीपल, बड़ या पलास की लकड़ी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

हवन सामग्री में घी, शहद, चीनी, दूध, (दूर्वा) कच्चा धान, कुम्हार के चाक की मिट्टी तथा पीले सरसो का तेल मिला कर इसके द्वारा ही उपरोक्त मन्त्र से हवन करें।

हवन के बाद उसी दिन या दूसरे दिन पांच कुंवारी कन्याएं तथा एक बटुक (जिसकी उम्र ८ वर्ष से ज्यादा न हो और कन्याओं की उम्र १२ वर्ष से ज्यादा न हो) का पूजन कर उन्हें भोजन करावें, भोजन में चने के दाने से बनी हुई मिठाई अवश्य होनी चाहिए, भोजन के बाद इन सभी को यथा शक्ति वस्त्र, दक्षिणा आदि देते हुए उनके पैर छू कर उन्हें प्रणाम करें।

यह एक दिन का प्रयोग है, जो किसी भी मंगलवार या रविवार अथवा बगलामुखी सिद्धि दिवस के अवसर पर सम्पन्न हो सकता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अद्वितीय है, और साधक को इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए, साधना के बाद थाली में रखी हुई जो सामग्री तथा तांत्रिक नारियल आदि हैं, उसे नदी या तालाब में विसर्जित कर दें तथा मूंगे की माला को धारण कर ले, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध होती है।

oct-89

जैन साधना साहित्य की सर्वश्रेष्ठ

सर्वार्थ सिद्धिदायिनी

भगवती पद्मावती लक्ष्मी साधना

जैन साहित्य उच्चकोटि के लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाओं में अग्रगण्य हैं, एक प्रकार से देखा जाय तो जितना श्रेष्ठ और अनुभवगम्य साधना साहित्य एवं साधना विधियां तपोनिष्ठ जैन साधुओं ने लिखी है, उतनी अन्यत्र कहीं प्राप्य नहीं।

श्री जिनपतिसूरी एक श्रेष्ठ साधक बने हैं, मुगलकाल में भी उच्चकोटि के मुगल बादशाह उनके सामने सिर झुकाते थे, लक्ष्मी से सम्बन्धित उच्चकोटि की साधनाएं उन्होंने सम्पन्न कर रखी थी, कहते हैं कि वे चलते चलते स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा कर लेते थे, जिस पात्र को स्पर्श कर लेते वह पात्र ही स्वर्ण का हो जाता था।

आगे चल कर आनन्दसूरि और अमरकन्दसूरि अत्यन्त सिद्ध महात्मा हुए, और उन्होंने उपरोक्त साधनाएं सीखी, ये दोनों सिद्ध किसी दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति को भी सम्पन्न होने का आशीर्वाद देते तो कुछ ही क्षणों में वह सम्पन्न हो जाता। नेमिनाथजी ने तत्वप्रबोध ग्रन्थ में बताया है कि लक्ष्मी छाया की तरह इनके साथ रहती थी, इन्होंने प्राचीन ग्रन्थों को टटोल कर और सर्वथा दिगम्बर जंगल में ही रहने वाले और केवल हवा भक्षण कर जीवित रहने वाले एक उच्चकोटि के योगी से यह पद्मावती साधना सीखी थी जो कि "कलिकाल कल्पतरू" कही गयी, आगे के आचार्यों ने इसे "सर्वार्थ सिद्धिदायिनी" कहा और उन्होंने इस साधना के माध्यम से "अष्टलक्ष्मी" सिद्धि प्राप्त कर ली।

उदयप्रभसूरि ने तो अपने ग्रन्थ में कहा है कि श्री आनन्द सूरि तथा अमरचन्द्र सूरि ने अपने हाथों से इस गोपनीय रहस्यमय और दुर्लभ पद्मावती साधना को कई वर्षों तक सेवा और तपस्या कर प्राप्त किया और सिद्धराज कहलाये।

आनन्दसूरिरिति तस्य बभूव शिष्यः
पूर्वोऽपरः शमधरोऽमरचन्द्रसूरिः।
बाल्येऽपि निर्दीलितवादिगजो जगाद
यौ व्याघ्रसिंह शिशुकाविति सिद्धराजः॥

वास्तव में ही पद्मावती साधना अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण साधना हैं, आचार्य राजशेखर ने कहा है

कि लक्ष्मी साधनाओं में यह अद्वितीय साधना है, एव तिलकसूरि ने इसी साधना के माध्यम से स्वर्ण प्रयोग और स्वर्णसिद्धि प्रयोग सम्पन्न किये और वे उस समय के अद्वितीय आचार्य कहलाये, मल्लीनाथ और सोमतिलक सूरी ने इसी साधना के माध्यम से हजारों लाखों लोगों की दरिद्रता समाप्त की, कनककुशल सूरि ने कहा कि जो अपने जीवन में इस साधना को सम्पन्न नहीं करता उससे ज्यादा अभागा और कोई नहीं हो सकता।

इसके अलावा अन्य कई तांत्रिक ग्रन्थों और साधना ग्रन्थों में भी इस गोपनीय साधना का अत्यन्त महात्म्य दिया है, एक प्रकार से देखा जाय तो लगभग सभी ग्रन्थों में पद्मावती की दुर्लभ साधना का उल्लेख है, परन्तु पूर्ण साधना विवरण कहीं पर भी नहीं मिल रहा था।

हमें पिछले दिनों एक अत्यन्त उच्चकोटि के जैन साधु से यह दुर्लभ गोपनीय साधना विधि ज्ञात हुई, उनके पास यह साधना विधि भोजपत्र पर लिखित प्राचीन पुस्तक में सग्रहित थी और उसके पत्र भी जीर्ण शीर्ण हो रहे थे, परन्तु इस साधु को भी इस साधना के माध्यम से अपूर्व सिद्धियां प्राप्त है।

दीपावली के अवसर पर मैं साधकों को यह दुर्लभ और महत्वपूर्ण पद्मावती साधना-उपासना प्रयोग दे रहा हूं और मुझे विश्वास है कि यह उनके संग्रह में एक रत्न की तरह होगा।

कोई भी साधक

यह आवश्यक नहीं है कि यह साधना केवल जैन ही करें, अपितु किसी भी वर्ण या जाति का साधक इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, यदि निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो तुरन्त ही लाभ होता है।

लाभ

श्री पादलिप्तसूरि महाराज ने इस साधना के सैकड़ों लाभ बताये हैं, उनके अनुसार इस साधना को सम्पन्न करने से भाग्य में लिखी हुई दरिद्रता समाप्त हो जाती है, उसका भाग्योदय हो जाता है, व्यापार में अचानक उन्नति होने लगती है, और चारों तरफ उसकी प्रशंसा तथा सम्मान होने लगता है।

इस साधना के माध्यम से शत्रु भय पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है, व्यक्ति रोग मुक्त हो कर दीर्घायु जीवन प्राप्त करता है, घर का कलह और तनाव समाप्त हो जाता है, खोया हुआ बालक शीघ्र ही घर आ जाता है, इसके प्रभाव से सुयोग्य कन्या का विवाह जल्दी सम्पन्न हो जाता है और सबसे बड़ी बात यह है कि इस साधना को पूरी करते करते ही लक्ष्मी का आगमन हो जाता है और साधना समाप्त होने से पहले ही उसको आकस्मिक धन लाभ, जुए में सफलता तथा आर्थिक लाभ होने लग जाता है, यदि वह कोई विशेष इच्छा ले कर साधना में बैठता है तो उसकी यह इच्छा पूर्ति अवश्य ही साधना काल में ही हो जाती है।

साधना समय

इस साधना को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु विशेष कर दीपावली से पहले के आठ दिन यदि इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो विशेष अनुकूल रहता है, जैन ग्रन्थों में बताया गया गया है, कि कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी से अमावस्या तक इस साधना को सम्पन्न करने पर निश्चित और श्रेष्ठ फल प्राप्त होता ही है।

इस वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी १.११.८८ को है, और दीपावली ९.११.८८ को है, अतः यह साधना १ नवम्बर से ९ नवम्बर के बीच सम्पन्न की जा सकती है।

साधना सामग्री

श्री मतिभद्रसूरि इस साधना के अद्वितीय आचार्य थे, उन्होंने साधना सामग्री में छः वस्तुओं की आवश्यकता बताई हैं– १. जल पात्र, २. केसर, ३. तेल का और घी का दीपक, ४. पद्मावती चित्र और यन्त्र, ५. चावल, ६. सोलह एक मुखी रुद्राक्ष।

उन्होंने और आगे के उच्चकोटि के साधकों ने इस साधना का आधार ही "एक मुखी रुद्राक्ष" बताया है, जो कि काजू की आकार के हो, और चौबीस तीर्थंकरों के मंत्रों से सिद्ध हों, ऐसे एक मुखी रुद्राक्ष के दाने पूरे जीवन भर के लिए पद्मावती साधना को सिद्ध करने के लिए अनुकूल हैं।

चौबीस तीर्थंकरों के मन्त्रों का विवरण कनक कुशलजी महाराज के "षोडश विद्या ग्रन्थ" में विस्तार से विवरण है. और उन्होंने प्रत्येक रुद्राक्ष के दाने को किस प्रकार से सिद्ध किया जाता है यह विधि बताई है. इसमे सिद्ध रुद्राक्ष के दाने ही इस साधना में प्रयोग किये जाते हैं।

दीपावली के अवसर पर पत्रिका कार्यालय एक श्रेष्ठ महात्मा से इस प्रकार से रुद्राक्ष मन्त्र सिद्ध करवा कर देने की व्यवस्था कर सकता है, प्रत्येक रुद्राक्ष पर व्यय मात्र २०) रू० आयेगा, पद्मावती यन्त्र और पद्मावती चित्र इसके साथ ही सर्वथा मुफ्त में भेजने की व्यवस्था होगी।

साधना रहस्य

सबसे पहले सामने पद्मावती यन्त्र और चित्र को फ्रेम में मंढवा कर स्थापित कर दें और हाथ में जल ले कर विनियोग करें।

अस्य श्री मंत्र राजस्य परम देवता पद्मावती चरणाम्बुजेभ्यो नमः। ॐ श्री पद्मावती मन्त्रस्य सुरासुर विद्याधर दक्षिणामूर्तो नागेन्द्र महाऋषिः निचृद्गायत्रीछन्दः। श्री महासुर सुन्दरो पद्मावती देवता। कमलबीजं आरम्भं महाशक्तिः। प्रणव कीलक। धर्मार्थिकाममोक्षार्थे निरुपद्रवाय प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

इससे पूर्व साधक को चाहिए कि वह स्नान कर पीली धोती पहिन कर पीला आसन बिछा कर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने पद्मावती यन्त्र एवं चित्र को स्थापित कर दे।

इस साधना में आप अपनी पत्नी और परिवार के साथ बैठ सकते हैं. इसके बाद निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ, पूजन करे–

जल

ॐ ह्रीं श्रां श्रीं अर्हं बीज संयुक्ताय श्री पार्श्वनाथजिनेश्वरशासनाधिष्ठिकाय उ क्लीं मन्त्रस्वरूपाय भगवती परमेश्वरी पद्मावतीं स्नापयामि -जलं समर्पयामि स्वाहा।

वस्त्र

ॐ ह्रीं श्रां श्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथोपसर्गहारिणी राजराजेश्वरी भगवती श्री पद्मावत्यै वस्त्रं समर्पयामि पूजयामि नमः।

गन्ध

ॐ ह्रीं श्रां श्रीं अर्हं सकल मन्त्रबीजाय ह्रींकाराय सर्वविघ्नहरणाय श्री पार्श्वनाथोपसर्गहारिणी राजराजेश्वरी भगवती श्री पद्मावत्यै सर्वांगेषु गंधान् विलेपयामि पूजयामि समर्पयामि नमः।

पुष्प

ॐ ह्रीं श्रां श्रीं अर्हं सकलमन्त्रबीजाय ह्रींकाराय सर्वविघ्नहरणाय श्री पार्श्वनाथोपसर्गहारिणी

राजराजेश्वरी भगवती श्री पद्मावत्यै कुसुमांजलि समर्पयामि पूजयामि नमः ।

अक्षत (चावल)

ऊं ह्रीं श्रां श्रीं अर्हं सकलमन्त्रबीजाय ह्रींकाराय सर्वविघ्नहरणाय श्री पार्श्वनाथोपसर्गहारिणी राजराजेश्वरी भगवती श्री पद्मावत्यै रत्नाक्षतान् समर्पयामि पूजयामि नमः ।

पुष्पमाला

ऊं ह्रीं श्रां श्रीं अर्हं सकलमन्त्रबीजाय ह्रींकाराय सर्वविघ्नहरणाय श्री पार्श्वनाथोपसर्गहारिणी राजराजेश्वरी भगवती श्री पद्मावत्यै पुष्पमालां हारान् समर्पयामि पूजयामि नमः ।

धूप

ऊं ह्रीं श्रां श्रीं अर्हं सकलमन्त्रबीजाय ह्रींकाराय सर्वविघ्नहरणाय श्री पार्श्वनाथोपसर्गहारिणी राजराजेश्वरी भगवती श्री पद्मावत्यै धूपमाघ्रापयामि पूजयामि नमः ।

दीप

ऊं ह्रीं श्रां श्रीं अर्हं सकलमन्त्रबीजाय ह्रींकाराय सर्वविघ्नहरणाय श्री पार्श्वनाथोपसर्गहारिणी राजराजेश्वरी भगवती श्री पद्मावत्यै दीपदानपूजां दर्शयामि पूजयामि नमः ।

फल

ऊं ह्रीं श्रां श्रीं अर्हं सकलमन्त्रबीजाय ह्रींकाराय सर्वविघ्नहरणाय श्री पार्श्वनाथोपसर्गहारिणी राजराजेश्वरी भगवती श्री पद्मावत्यै फलानि समर्पयामि पूजयामि नमः ।

प्रार्थना

तवदेव गुणानुवर्णने, चतुरानो चतुराननादयः ।
तदिहंक सुखेषु, स्तवनंकस्तव कर्तु मीश्वरीः ॥
ओम संविन्मये परे देवि, परामृतचरूप्रिये ।
अनुज्ञां श्रीपद्मे देहि, परिवारार्चनाय मे ॥

एक मुखी रुद्राक्ष

ओमकाराय ह्रींकाराय उंकाराय नमो नमः
लक्ष्मी सौभाग्यकरा जगत्सुखकरा, वंध्यापि पुत्रापिता,
नानारोग विनाशिनी अघहरा, कृपाजने रक्षिका ।
रंकानां धनदायिका, सुफलदा, वांछार्थि चिन्तामणि,
त्रैलोक्याधिपति भवार्णवत्राता, पद्मावती पातु वः ।
ओंकाराय ह्रींकाराय ओमकाराय नमो नमः ।

ऐसा कह कर हाथ में दो एक मुखी रुद्राक्ष ले कर एक तो भगवती पद्मावती यन्त्र के सामने चढ़ा दें और दूसरा भगवती पद्मावती चित्र के सामने समर्पित कर दें, इस प्रकार नित्य दो एक मुखी रुद्राक्ष चढ़ावे, और इसी प्रकार नित्य पूजा करें ।

पूजा करने के बाद कमल गट्टे की माला या किसी भी माला से निम्न दुर्लभ गोपनीय पद्मावती मन्त्र का केवल २१ बार पाठ करे ।

गोपनीय पद्मावती मन्त्र

ऊं नमो भगवति! त्रिभुवनवशंकरी सर्वाभरणभूषिते पद्मनयने! पद्मिनी पद्मप्रभे! पद्कोशिनि! पद्महस्ते! ह्रीं ह्रीं कुरु कुरु मम हृदयकार्यं कुरु कुरु, मम सर्वशान्तिं कुरु कुरु, मम सर्वराज्यवश्यं कुरु कुरु, सर्वलोकवश्यं कुरु कुरु, मम सर्वस्त्रीवश्यं कुरु कुरु, मम सर्वभूतपिशाच-

प्रेतरोषं हर हर सर्वरोगान छिंद छिंद, सर्वविघ्नान् भिंद भिंद, सर्वविषं छिंद छिंद, सर्वकुरूमृगं छिंद छिंद सर्वशाकिनी छिंद छिंद, श्री पार्श्वजिनपदाम्भाजंभृंगि नमो दत्ताय देवी नमः। श्रोम ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्र स्वाहा! सर्वजनराज्यस्त्रीपुरुषवश्यं सर्व सर्व उ श्रां क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्री देवि। पद्मावति! त्रिपुरकामसाधिनी दुर्जनमतिविनाशिनी त्रैलोक्यक्षोभिनो श्रीपार्श्वनाथोपसर्गहारिणी क्लीं ब्लूं मम दुष्टान् हन हन, मम सर्वकार्याणि साधय साधय हुं फट् स्वाहा ।

श्रां क्रों ह्रीं क्लीं ह्सौ पद्मे! देवि! मम सर्वजगद्वश्यं कुरु कुरु सर्वविघ्नान् नाशय नाशय पुरक्षोभं कुरु कुरु, ह्रीं संवौषट् स्वाहा ।

ॐ श्रां क्रों ह्रौ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ह्म्ल्व्र्यूं पद्मावती सर्वपुरजनान् क्षोभय क्षोभय मम पादयोः पातय पातय, श्राकर्षणी ह्रीं नमः ।

ॐ ह्रीं क्रों श्रर्हं मम पापं फट् दह दह हन हन पच पच पाचय पाचय हं ब्मं ब्मां क्ष्वीं हंस ब्मं वंह्म यः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षै क्षौं क्षं क्षः क्षि ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रें ह्रों ह्रौ ह्रं ह्रः ह्रिः ह्रि द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः मम श्रीरस्तु, पुष्टिरस्तु कल्याणमस्तु ।।

कलिकाल कल्पतरू सर्वार्थं सिद्धिदायिनी पद्मावती माला

नित्य दो मधुरूपेण एक मुखी रुद्राक्ष भेंट करने से यह श्राठ दिन की साधना है, अतः दीपावली की रात्रि को अंतिम दो एक मुखी रुद्राक्ष भेंट कर लक्ष्मी पूजा के समय पद्मावती मन्त्र श्रौर चित्र के सामने ही उन सभी सोलह एक मुखी रुद्राक्ष को एक धागे में पिरो कर गले में पहिन लेनी चाहिए, यह माला अपने श्राप में अद्वितीय माला कही गई है, इसे कलिकाल में "कल्पतरू" के समान बताई गई ,, जैन साधकों श्रौर श्राचार्यों ने इसे "सर्वार्थसिद्धिदायिनी" माला बताया है।

दूसरे दिन श्राप चाहें तो इस माला को उतार कर पद्मावती यन्त्र चित्र के सामने रख सकते हैं, श्रौर जब भी कोई विपत्ति श्रावे या जब भी कोई कार्य सम्पन्न कराना हो तो, इस माला को धारण कर लें।

कुर्ते के नीचे इस माला को धारण कर किसी भी व्यक्ति के सामने जाने से सामने वाला सम्मोहित हो जाता है, कोर्ट कचहरी में न्यायाधीश अनुकूल हो जाता है, किसी भी व्यक्ति के सामने जिस कार्य के लिए जाते हैं, वह कार्य तुरन्त कर लेता है, किसी स्त्री के सामने पहिन कर जाने से वह पूर्णतः वश में हो जाती है, श्रौर इसको पहिन कर जो इच्छा मन में धारण की जाती है वह इच्छा तुरन्त पूरी हो जाती है।

प्रत्येक वर्ष इसी माला से प्रयोग हो सकता है, श्रौर यह माला श्रापके जीवन भर के लिए उपयोगी हो सकती है, श्रापकी श्राने वाली पीढ़ी भी इस माला को पहिन कर अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकती है।

ऊपर जो मैंने पद्मावती मन्त्र दिया है, जैन श्राचार्यों के अनुसार यदि नित्य सुबह उठ कर केवल एक बार इसको पढ़ कर घर से बाहर जाय तो दिन भर उसके सारे काम अनुकूल होते रहते हैं, श्रौर चित में प्रसन्नता बनी रहती है।

यह प्रयोग विवरण श्रौर मन्त्र घुमक्कड़ उच्चकोटि के जैन योगी से प्राप्त हुए हैं, इसीलिए पत्रिका कार्यालय उनके लिए श्राभार प्रदर्शित करता है, उपरोक्त प्रकार से मन्त्र सिद्ध सोलह मधु रूपेण एक मुखी रुद्राक्ष पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करने श्रौर अग्रिम धनराशि मनियार्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेजने पर भली प्रकार से पेक कर भेजने की व्वस्था की जा सकती है।

जैन साधना साहित्य की सर्वश्रेष्ठ

सर्वार्थ सिद्धिदायिनी

भगवती पद्‌मावती साधना

जैन साहित्य उच्चकोटि के लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाओं में अग्रगण्य हैं, एक प्रकार से देखा जाय तो जितना श्रेष्ठ और अनुभवगम्य साधना साहित्य एवं साधना विधियां तपोनिष्ठ जैन साधुओं ने लिखी हैं, उतनी अन्यत्र कहीं प्राप्य नहीं।

श्री जिनपति सूरि एक श्रेष्ठ साधक बने हैं, मुगलकाल में भी उच्चकोटि के मुगल बादशाह उनके सामने सिर झुकाते थे, लक्ष्मी से सम्बन्धित उच्चकोटि की साधनाएं उन्होंने सम्पन्न कर रखी थीं, कहते हैं कि वे चलते-चलते स्वर्ण वर्षा कर लेते थे, जिस पात्र को स्पर्श कर लेते—वह पात्र ही स्वर्ण का हो जाता था।

आगे चल कर आनन्द सूरि और अमरकन्द सूरि अत्यन्त सिद्ध महात्मा हुए और उन्होंने उपरोक्त साधनाएं सीखीं, ये दोनों सिद्ध किसी दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति को भी सम्पन्न होने का आशीर्वाद दे देते तो कुछ ही क्षणों में वह सम्पन्न हो जाता, नेमिनाथ जी ने "तत्व प्रबोध" ग्रन्थ में बताया है कि लक्ष्मी छाया की तरह इनके साथ रहती थी, इन्होंने प्राचीन ग्रन्थों को टटोल कर और सर्वथा दिगम्बर जंगल में ही रहने वाले और केवल हवा भक्षण कर जीवित रहने वाले एक उच्चकोटि के योगी से यह पद्मावती साधना सीखी थी—जो कि "कलिकाल कल्पतरु" कही गयी, आगे के आचार्यों ने इसे "सर्वार्थ सिद्धिदायिनी" कहा और उन्होंने इस साधना के माध्यम से "अष्टलक्ष्मी" सिद्धि प्राप्त कर ली।

उदयप्रभ सूरि ने तो अपने ग्रन्थ में कहा है कि श्री आनन्द सूरि तथा अमरचन्द्र सूरि ने अपने हाथों से इस गोपनीय, रहस्यमय और दुर्लभ पद्मावती साधना को कई वर्षों तक सेवा और तपस्या कर प्राप्त किया और सिद्धराज कहलाये।

आनन्दसूरिरिति तस्य बभूव शिष्य:
पूर्वोपर: शमधरोऽमरचन्द्रसूरि:।
बाल्येपि निदीलितवादिगजो जगाद
यो व्याघ्रसिंह शिशुकाविति सिद्धराज।।

आज भी जैन लोगों पर लक्ष्मी की विशेष कृपा क्यों है? क्यों उनके यहां धन-दौलत की रेल-पेल लगी रहती है? निश्चय ही इसका कारण उनके पूर्वजों द्वारा की गई पद्मावती साधना है, जिसका ज्ञान उन्हें दिगम्बर गुरुवों और महात्माओं से मिला था।

वास्तव में ही पद्मावती साधना अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण साधना है, आचार्य राजशेखर ने कहा है कि लक्ष्मी साधनाओं में यह अद्वितीय साधना है, एवं तिलक सूरि ने इसी साधना के माध्यम से स्वर्ण प्रयोग और स्वर्ण सिद्धि प्रयोग सम्पन्न किये और वे उस समय के अद्वितीय आचार्य कहलाये, मल्लीनाथ और सोमतिलक सूरि ने इसी साधना के माध्यम से हजारों-लाखों लोगों की दरिद्रता समाप्त की, कनककुशल सूरि ने कहा कि जो व्यक्ति अपने जीवन में इस साधना को सम्पन्न नहीं करता उससे ज्यादा अभागा और कोई नहीं हो सकता।

इसके अलावा अन्य कई तान्त्रिक ग्रन्थों और साधना ग्रन्थों में भी इस गोपनीय साधना का अत्यन्त महात्म्य दिया है, एक प्रकार से देखा जाय, तो लगभग सभी ग्रन्थों में पद्मावती की दुर्लभ साधना का उल्लेख है, परन्तु पूर्ण साधना विवरण कहीं पर भी नहीं मिल रहा था।

हमें पिछले दिनों एक अत्यन्त उच्चकोटि के जैन साधु से यह दुर्लभ गोपनीय साधना विधि ज्ञात हुई, उनके पास यह साधना-विधि भोज पत्र पर लिखित प्राचीन पुस्तक में संग्रहित थी, और उसके पन्ने भी जीर्ण-शीर्ण हो रहे थे, परन्तु इस साधु को भी इस साधना के माध्यम से अपूर्व सिद्धियां प्राप्त हैं।

दीपावली के अवसर पर मैं साधकों को यह दुर्लभ और महत्वपूर्ण पद्मावती साधना, उपासना प्रयोग दे रहा हूं, और मुझे विश्वास है, कि यह उनके संग्रह में एक रत्न की तरह होगा।

कोई भी साधक

यह आवश्यक नहीं है, कि यह साधना केवल जैन ही करें, अपितु किसी भी वर्ण या जाति का साधक इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, यदि निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न किया जाय, तो तुरन्त ही लाभ होता है।

लाभ

श्री पादलिप्त सूरि महाराज ने इस साधना के सैकड़ों लाभ बताये हैं, उनके अनुसार इस साधना को सम्पन्न करने से भाग्य में लिखी हुई दरिद्रता समाप्त हो जाती है, उसका भाग्योदय हो जाता है, व्यापार में अचानक उन्नति होने लगती है, और चारों तरफ उसकी प्रशंसा तथा सम्मान होने लगता है।

इस साधना के माध्यम से शत्रु भय पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है, व्यक्ति रोग मुक्त हो कर दीर्घायु जीवन प्राप्त करता है, घर का कलह और तनाव समाप्त हो जाता है, खोया हुआ बालक शीघ्र ही घर आ जाता है, इसके प्रभाव से सुयोग्य कन्या का विवाह जल्दी सम्पन्न हो जाता है, और सबसे बड़ी बात यह है, कि इस साधना को पूरा करते-करते ही लक्ष्मी का आगमन हो जाता है, और साधना समाप्त होने से पहले ही उसको आकस्मिक धन लाभ, जुएं में सफलता तथा आर्थिक लाभ होने लग जाता है, यदि वह कोई विशेष इच्छा ले कर साधना में बैठता है, तो उसकी यह इच्छा पूर्ति अवश्य ही साधना काल में ही हो जाती है।

साधना समय

इस साधना को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु विशेष कर दीपावली से पहले के आठ दिनों में यदि इस साधना को सम्पन्न किया जाय, तो विशेष अनुकूल रहता है, जैन ग्रन्थों में बताया गया है, कि कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी से अमावस्या तक इस साधना को सम्पन्न करने पर निश्चित और श्रेष्ठ फल प्राप्त होता ही है।

इस वर्ष कार्तिक कृष्ण अष्टमी ११-१०-९० को है, और दीपावली १८-१०-९० को है, अतः यह साधना ११ अक्टूबर से १८ अक्टूबर तक सम्पन्न की जा सकती है।

साधना-सामग्री

श्री मतिभद्र सूरि इस साधना के अद्वितीय आचार्य थे, उन्होंने साधना सामग्री में छः वस्तुओं की आवश्यकता बताई हैं — १-जलपात्र, २-केसर, ३-तेल का और घी का दीपक, ४-चावल, ५- **"पद्मावती चित्र और यन्त्र"** ६- **"सोलह एकमुखी रुद्राक्ष"** ।

उन्होंने और आगे के उच्चकोटि के साधकों ने इस साधना का आधार ही "एकमुखी रुद्राक्ष" बताया है, जो कि काजू के आकार के हों, और चौबीस तीर्थंकरों के मन्त्रों से सिद्ध हों, ऐसे एकमुखी रुद्राक्ष के दाने पूरे जीवन भर के लिए, पद्मावती साधना को सिद्ध करने के लिए अनुकूल हैं ।

चौबीस तीर्थंकरों के मन्त्रों का विवरण कनककुशल जी महाराज के "षोडश विद्या ग्रन्थ" में विस्तार से वर्णित है, और उन्होंने प्रत्येक रुद्राक्ष के दाने को किस प्रकार से सिद्ध किया जाता है, यह विधि बताई है, इससे सिद्ध रुद्राक्ष के दाने ही इस साधना में प्रयोग किये जाते हैं।

साधना-रहस्य

सबसे पहले सामने पद्मावती यन्त्र और चित्र फ्रेम में मढ़वा कर स्थापित कर दें, और हाथ में जल ले कर संकल्प-विनियोग करें —

हे देवी मैं आपके चरणों को नमस्कार करते हुए यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं, आप कमल बीज से उत्पन्न महाशक्ति हैं, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की पूर्णता, उपद्रव-शान्ति, इच्छा-पूर्ति हेतु यह पूजा आपको समर्पित है ।

इससे पूर्व साधक को चाहिए कि वह स्नान कर पीली धोती पहिन कर पीला आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर यन्त्र-चित्र स्थापित कर यह साधना प्रारम्भ करें, इस साधना में आप अपनी पत्नी और परिवार के साथ बैठ सकते हैं, इसके बाद निम्नलिखित क्रम से पूजा प्रारंभ करें, इस हेतु यन्त्र के सामने ही एक छोटा सा तांबे का पात्र अवश्य रख दें ।

सर्वप्रथम पद्मावती देवी का ध्यान करते हुए यन्त्र पर जल अर्पित करें, उसके पश्चात मौली, जो कि वस्त्र स्वरूप है, चढ़ाएं, उसके पश्चात अबीर, गुलाल, केसर, इत्र इत्यादि देवी को अर्पित करें, पूजा स्थान में वातावरण पूरी तरह सुगन्धित होना चाहिए ।

इसके पश्चात् अपने दोनों हाथों में पुष्प लेकर अंजली बनाते हुए पुष्प अर्पित करें, तत्पश्चात् "ह्रीं" स्वरूपा सर्व विघ्नहारिणी राजराजेश्वरी पद्मावती देवी का ध्यान करते हुए अक्षत (चावल) चढ़ाएं, और फिर पुष्प-माला, पूजा स्थान में धूप तथा दीप देवी के सामने एक ओर स्थापित होने चाहिए, इसके पश्चात् फल समर्पित करें और निम्नलिखित मंत्र से प्रार्थना करें—

प्रार्थना

तवदेवि गुणानुवर्णने, चतुरानो चतुराननादयः ।
तदिहंक सुखेषु, स्तवनंकस्तव कर्तुमीश्वरीः ।।
ॐ संविन्मये परे देवि, परामृतचरुप्रिये ।
अनुज्ञां श्रीपद्मे देहि, परिवारार्चनाय मे ।।

अब पूजा का प्रमुख अंग रुद्राक्ष पूजन प्रारम्भ होता है, और इसमें नीचे लिखा मंत्र जिसमें देवी को विभिन्न उपमाएं देते हुए, पूर्ण हृदय से प्रार्थना की जाती है, वह मंत्र जप कर एक रुद्राक्ष भगवती पद्मावती यंत्र के सामने अर्पित कर दें और दूसरा चित्र के सामने अर्पित करें, नित्य यही पूजन क्रम है ।

पूजा करने के पश्चात् **"कमल गट्टे की माला"** से निम्न दुर्लभ गोपनीय पद्मावती मंत्र का केवल २१ बार पाठ करें—

यह साधना किसी भी वर्ण या जाति का साधक सम्पन्न कर सकता है यदि निष्ठा पूर्वक इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो तुरन्त लाभ होता है ।

गोपनीय पद्मावती मन्त्र

ॐ नमो भगवति ! त्रिभुवनवशंकरी सर्वाभरणभूषिते पद्मनयने ! पद्मिनी पद्मप्रभे ! पद्मकोशिनी ! पद्महस्ते ! ह्रीं ह्रीं कुरु कुरु मम हृदयंकार्यं कुरु कुरु मम सर्वशांन्ति कुरु कुरु, मम सर्वराज्यवश्यं कुरु कुरु, सर्वलोकवश्यं कुरु कुरु, मम सर्वस्त्रीवश्यं कुरु कुरु, मम सर्वं भूत पिशाच प्रेतरोषं हर हर सर्व रोगान् छिद छिद, सर्वविघ्नान् भिंद भिंद, सर्वविषं छिद छिद सर्वकुरुमृगं छिद छिद सर्वशाकिनी छिद छिद, श्री पार्श्वजनपदाम्भोजंभृगि नमो दत्ताय देवि नमः । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा । सर्वजन राज्यस्त्रीपुरुषवश्यं सर्वं सर्वं उ ग्रां क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्रीं देवि ! पद्मावती ! त्रिपुरकामसाधिनी दुर्जनमतिविनाशिन त्रैलोक्य क्षोभिणी श्रीपार्श्वनाथोपसर्गहारिणी क्लीं ब्लूं मम दुष्टान् हन् हन्, मम सर्वकार्याणि साधय साधय हुं फट् स्वाहा ।

ग्रां क्रों ह्रीं क्लीं ह्रूं सौं पद्मे ! देवि ! मम सर्वजगद्वश्यं कुरु कुरु सर्वविघ्नान् नाशय नाशय पुरक्षोभं कुरु कुरु, ह्रीं संवौषट् स्वाहा ।

ॐ ग्रां क्रों ह्रौ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ह्म्ल्व्र्यूं पद्मावती सर्वपुरजनान् क्षोभय क्षोभय मम पादयोः पातय पातय, आकर्षणी ह्रीं नमः ।

ॐ ह्रीं क्रों अर्हं मम पापं फट् दह दह हन हन पच पच पाचय पाचय हं ब्मं ब्मां क्ष्वीं हंस ब्मं बंह्म यः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षं क्षः क्षि ह्रां ह्रीं हं हें हों हौ हं हः हिः हिः हि द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोर्हते भगवते श्री मते ठ. ठः मम श्रीरस्तु, पुष्टिरस्तु कल्याणमस्तु ।।

कलिकाल कल्पतरु सर्वार्थ सिद्धिदायिनी—पद्मावती माला

नित्य दो मधुरूपेण एकमुखी रुद्राक्ष भेंट करें, यह आठ दिन की साधना है अतः दीपावली की रात्रि को अन्तिम दो एकमुखी रुद्राक्ष भेंट कर लक्ष्मी पूजन के समय पद्मावती यन्त्र और चित्र के सामने ही उन सभी सोलह एकमुखी रुद्राक्षों को एक धागे में पिरो कर गले में पहिन लेना चाहिए, यह माला अपने आपमें अद्वितीय माला कही गई है, कलिकाल में "कल्पतरु" के समान बताई गई है, जैन साधकों और आचार्यों ने इसे "सर्वार्थ सिद्धिदायिनी" माला बताया है ।

दूसरे दिन आप चाहें तो इस माला को उतार कर पद्मावती यन्त्र चित्र के सामने रख सकते हैं, और जब भी विपत्ति आवे या जब भी कोई कार्य सम्पन्न कराना हो तो, इस माला को धारण कर लें ।

कुर्ते के नीचे इस माला को धारण कर किसी भी व्यक्ति के सामने जाने से सामने वाला सम्मोहित हो जाता है, कोर्ट कचहरी में न्यायाधीश अनुकूल हो जाता है, किसी भी व्यक्ति के सामने जिस कार्य के लिए जाते हैं वह कार्य तुरन्त सम्पन्न हो जाता है, किसी स्त्री के सामने पहिन कर जाने से वह पूर्णतः वश में हो जाती है, और इसको पहिन कर जो इच्छा मन में धारण की जाती है वह इच्छा तुरन्त पूरी हो जाती है ।

प्रत्येक वर्ष इसी माला से प्रयोग हो सकता है, और यह माला आपके जीवन भर के लिए उपयोगी हो सकती है, आपकी आने वाली पीढ़ी भी इस माला को पहिन कर अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकती है ।

ऊपर जो मैंने पद्मावती मन्त्र दिया है, जैन आचार्यों के अनुसार यदि नित्य सुबह केवल एक बार इसका पढ़ कर घर के बाहर जाय तो दिन भर उसके सारे काम अनुकूल होते रहते हैं, और चित्त में प्रसन्नता बनी रहती है । ●

oct-88

दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ

भगवती लक्ष्मी की सर्वोच्च साधना

श्री कमला तन्त्रम्

शास्त्रों में और तांत्रोक्त ग्रन्थों में दस महाविद्याओं के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है और बताया गया है, कि संसार की सारी साधनाएं इन दस महाविद्याओं में सन्निहित हैं, बगला, काली, तारा, षोडशी, छिन्नमस्ता, भैरवी, भुवनेश्वरी, धूमावती, मातंगी के साथ साथ दसवीं महाविद्या का नाम "कमला" है, जो कि इन सब महाविद्याओं में श्रेष्ठ और अपने आप में अद्वितीय है।

प्राचीन काल से ही कमला साधना को सर्वाधिक महत्व दिया गया है क्योंकि यह लक्ष्मी प्रत्यक्ष साधना है, उच्चकोटि के योगी साधक और गृहस्थ कमला साधना को ही अपने जीवन का ध्येय मानते हैं कहते हैं कि जो साधक दीपावली पर कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, उसे जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

यों कमला को लक्ष्मी का प्रत्यक्ष रूप बताया है, अतः धन त्रयोदसी के दिन इसकी पूजा विधिवत करनी चाहिए, इसके अलावा इसकी पूजा दीपावली की रात्रि को भी सम्पन्न की जा सकती है, इस वर्ष धनत्रयोदसी ७ नवम्बर को तथा दीपावली ९ नवम्बर को है।

साधना

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, यथासंभव इस साधना को रात्रि को ही सम्पन्न किया जाना चाहिए, परन्तु यदि दिन को भी यह साधना या पूजा सम्पन्न की जाय तो कोई दोष नहीं है, साधक चाहे तो अकेले या अपनी पत्नी और परिवार के साथ बैठ कर इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साधना समय

जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि यों तो यह साधना वर्ष में किसी भी दिन सम्पन्न की जा सकती है, परन्तु

इसका विशेष उल्लेख धनत्रयोदशी या दीपावली की रात्रि को सम्पन्न करने की व्यवस्था है, इस साधना में साधक सफेद धोती पहिन कर सफेद आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और कंधों पर भी सफेद धोती डाल दे, स्नान कर पूर्ण पवित्रता के साथ इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए ।

साधना सामग्री

इस साधना में १. कमला महाविद्या यन्त्र, २. कमला महाविद्या चित्र, ३. कमल गट्टे की माला, ४. मोती शंख, ५. पांच हकीक पत्थर और ६. पांच एक मुखी रुद्राक्ष होने चाहिए; इसके अलावा जल पात्र, केसर, अक्षत पुष्प, पुष्प माला, फल आदि सामान्य पूजा की सामग्री होनी चाहिए ।

ऊपर जो विशेष साधना सामग्री का उल्लेख किया गया है वह साधना सामग्री साधक न हैं तो कहीं से भी प्राप्त कर सकता है, इस कार्य में पत्रिका कार्यालय भी सहयोग दे सकता है, कमल गट्टे की माला- मूल्य ५०)रु०, मोती शंख- ३५)रु०, पांच हकीक पत्थर- मूल्य ५)रु०, और पांच एक मुखी रुद्राक्ष- मूल्य १०५)रु० हैं, इसके अलावा साधकों की सुविधा के लिए मन्त्र सिद्ध कमला महाविद्या यन्त्र और कमला महाविद्या चित्र सर्वथा मुफ्त में भेजने की व्यवस्था की जा सकती है ।

जो उच्चकोटि के साधक हैं, जिनको वास्तव में ही साधना की सूक्ष्म दृष्टि है, जो अपने जीवन में उच्चस्तरीय साधना करना चाहते हैं, उनको अवश्य ही यह कमला महाविद्या साधना इस वर्ष सम्पन्न करनी चाहिए ।

साधना विवरण

सारी सामग्री सामने लकड़ी के तख्ते पर या लकड़ी के पट्टे पर सफेद कपड़ा बिछा कर रख दें और उस पर हकीक पत्थर, मोती शंख, एक मुखी रुद्राक्ष आदि रख दें, (इस बात का ध्यान रहे कि इससे पूर्व प्रयोग या पूजा में लाए हुए एक मुखी रुद्राक्ष, मोती शंख या अन्य सामग्री इस महाविद्या के पूजन प्रयोग में उपयोग नहीं की जा सकती) इसके बाद हाथ में जल ले कर विनियोग करें ।

विनियोग

ॐ अस्य श्री सिद्ध-मन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः । श्रीं बीजं । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकं । सर्व क्लेश-पीड़ा-परिहारार्थं सर्व-दुःख-दारिद्रय-नाशनार्थं सर्व-कार्य-सिद्धयर्थं च श्री सिद्ध लक्ष्मी-मन्त्र-जपे विनियोग ।

इसके बाद कर न्यास एवं अंग न्यास करें ।

अंग न्यास

हिरण्य-गर्भ-ऋषये नमः शिरसि ।
अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे ।
श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महा सरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि ।
श्री बीजाय नमः लिंगे ।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।
सर्व-क्लेश-पीड़ा-परिहारार्थ सर्व-दुख दारिद्रय नाशनार्थ सर्व कार्य-सिद्धयर्थ च श्री सिद्धि-लक्ष्मी-मन्त्र-जपे विनियोग य नमः सर्वांगे ।

कर न्यास

ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ श्रीं तर्जनिभ्यां नमः ।
ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ श्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ श्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

इसके बाद व्यापक न्यास करें; न्यास का तात्पर्य जिन जिन अंगों का वर्णन है, उसको स्पर्श करने से न्यास सम्पन्न होता है।

व्यापक न्यास

ॐ ऐं ज्ञानाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ श्रीं शक्तये मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ क्लीं बलाय अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ सौ वीर्याय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ बृहत् प्रसूत्यै नमस्तेजसे करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

इसके बाद कमला यन्त्र और चित्र को जल से धो कर पोंछ कर उस पर केसर का तिलक कर दोनों हाथों को जोड़ कर ध्यान करें।

ध्यान

ॐ कान्त्या कांचन-सन्निभां हिम-गिरि प्रख्यै-
श्चतुर्भिगजेर्हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटेरा-
सिच्यमानां श्रियम् ।
बिभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरिटो-
ज्ज्वलां;
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-लसितां वन्दे रविन्द-
स्थिताम् ।।

इसके बाद पात्र में मोती शंख रख दें जो स्थायी लक्ष्मी का प्रतीक है, उस पर पहले दुग्ध धार छोड़ कर फिर जल की धार छोडे फिर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर पुष्प के आसन पर उसे स्थापित करें और उस पर अष्टलक्ष्मी की प्रतीक स्वरूप निम्न मन्त्रों के द्वारा आठ केसर की बिन्दियां लगायें और बीच में भगवती "ऋद्धि" को स्थापित करें।

१. ॐ विभूत्यै नमः। २. ॐ उन्मन्यै नमः। ३. ॐ कान्त्यै नमः। ४. ॐ सृष्ट्यै नमः। ५. ॐ कीर्त्यै नमः। ६. ॐ सन्नत्यै नमः। ७. ॐ पुष्ट्यै नमः। ८. ॐ उत्कृष्ट्यै नमः। ९. पीठ मध्ये- ॐ ऋद्धयै नमः।

फिर अपने सामने जो पांच हकीक पत्थर रखे हुए हैं, उनमें से प्रत्येक को जल से धो कर पोंछ कर अपने स्थान पर स्थापित कर उस पर निम्न मन्त्र से केसर से तिलक करें–

१. ॐ लोहिताक्ष्यै नमः। २. ॐ विरूपायै नमः। ३. ॐ करात्यै नमः। ४. ॐ समदायै नमः। ५. ॐ अमोघायै नमः।

इनकी पूजा करने से जीवन का सारा दुख, दरिद्रता, अभाव और कष्ट समाप्त हो जाता है, इसीलिए शास्त्रों में इनकी पूजा और स्थापना को महत्व दिया है।

इसके बाद पांच एक मुखी रुद्राक्ष को किसी पात्र में रख कर उसे दूध, दही, घी, शहद और शक्कर- इन पांच तत्वों से स्नान कराकर फिर शुद्ध जल से स्नान करावे और स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर अपने स्थान पर स्थापित कर दें और उन पर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए केसर का तिलक करें।

१. ॐ उमायै नमः। २. ॐ सरस्वत्यै नमः। ३. ॐ दुर्गायै नमः। ४. ॐ लक्ष्म्यै नमः। ५. ॐ गायत्र्यै नमः।

इसके बाद एक तेल का दीपक और एक घृत का दीपक लगा लें; और फिर सामने कमल गट्टे की माला रख कर उसको जल से धो कर पोंछ कर उस पर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ केसर का तिलक लगाये और उसमें देवताओं का आह्वान करें।

ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्नये नमः। ॐ मं यमाय नमः। ॐ क्षं निर्ऋतये नम।

वं ॐ वरुणाय नमः । ॐ यं वायवे नमः । ॐ कुं कुवेराय नमः । ॐ ईं ईशानाय नमः । ईशान-पूर्वयोर्मध्ये ॐ श्रां ब्रह्मणे नमः । निऋति-पश्चिमयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः ।

इसके बाद उसी स्थान पर बैठ कर मन्त्र जप करें, इस साधना में ११ माला मन्त्र जप का विधान है, परन्तु इस साधना की विशेषता यह है कि प्रत्येक माला के लिए अलग अलग मन्त्र है, इस प्रकार इस साधना में एक मंत्र की एक माला जपते हुए निम्न ग्यारह मन्त्र की एक एक माला मन्त्र जप करें, तब यह पूजन प्रयोग व अनुष्ठान पूर्ण माना जाता है।

शास्त्रों में कहा है कि–

अथ वक्ष्ये श्रियो मन्त्रान् श्री-सौभाग्य-फल-प्रदान् ।
यस्याः कटाक्ष-मात्रेण त्रैलोक्यमति-वर्तति ॥

अर्थात् अब मैं ऐश्वर्य और सौभाग्य रूपी फलों को देने वाली कमला(लक्ष्मी) के मन्त्रों को कहूंगा जिसकी कृपा मात्र से साधक तीनों लोकों में पूर्णता, सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करता है।

मन्त्र विधान

१. एकाक्षर मन्त्र	"श्रीं"
२. चतुराक्षर मन्त्र	ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं
३. दशाक्षर मन्त्र	नमः कमल – वासिन्यै स्वाहा ।
४. एकदशाक्षरा मन्त्र	ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्म्यै नमः ।
५. द्वादशाक्षर मन्त्र	ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः जगत् प्रसूत्यै नमः ।
६. सप्त दशाक्षर मन्त्र	ऐं ह्रीं श्रीं आद्य-लक्ष्मि स्वयम्भुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः ।
७. त्रयोविंशत्यक्षर मन्त्र	ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।
८. सप्त विंशत्यक्षर मंत्र	ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः ।
९. अष्टाविंशत्यक्षर मंत्र	ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ ।
१०. त्रयोदशाक्षर मन्त्र	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत् प्रसूत्यै नमः ।
११. अष्टा-विंशत्यक्षर मन्त्र	ॐ ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः ।

इसके बाद साधक वहीं पर बैठ कर किसी पात्र में अग्नि स्थापन कर १०८ घृत की आहुतियां दें, आहुती देते समय "श्रीं" का उच्चारण करें।

इस प्रकार करने से अभूतपूर्व सिद्धि और कमला महाविद्या सिद्ध होती है जो कि अपने आप में लक्ष्मी से सम्बन्धित सर्वोच्च साधना कही गयी है।

मुहूर्त

श्री महालक्ष्मी पूजा

* इस वर्ष दीपावली ९.११.८८ को लक्ष्मी पूजन मुहूर्त शाम ६.१३ मिनट से ८.९ मिनट तक है, इसके बाद १२.४१ से २.५८ तक है।
* धनत्रयोदशी-कुबेर पूजन– ७.११.८८ को सायं ७.०२ से ८.३० तक है ।
* बही खाते लाने का मुहूर्त– १४.१०.८८ या १६.१०.८८ या १९.१०.८८ या २३.१०.८८ (दिन भर) ।
* रोकड़ मिलाव लेखन – १०.११.८८ प्रातः ६.५८ से ८.१९ मिनट तक ।

Sept -89

सिद्धाश्रम पंचांग—कमला जयन्ती—३०-१०-८६

तंत्र क्षेत्र में

कमला साधना

एक बार सनत कुमार समस्त लोकों का भ्रमण करते हुए विष्णु लोक में जा पहुंचे, वहां उन्होंने भगवान विष्णु के साथ पलंग पर आसीन वस्त्र एवं आभूषणों से विभूषित महामाया भगवती कमला के दर्शन किये तो भक्ति भाव से गदगद हो कर सनत कुमार उनकी स्तुति करने लगे।

[हे, भगवती ! तुम लक्ष्मी स्वरूपा हो, तुम्हारी कृपा से मुझको सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो, हे, लक्ष्मी ! आप कृपा कर मेरी वाणी और मेरे मन को सही रास्ते पर गतिशील करे, मुझे ओज, तेज बल, बुद्धि क्षमता और वैभव प्राप्त हो। महामाया कमला को पाकर स्वयं आदिदेव भगवान तीनों रूपों में प्रगट हो कर समस्त लोकों का सृजन, पालन, और संहार करते हैं, वही आद्या शक्ति मेरा कल्याण करे। जिनकी कृपा दृष्टि से कमल से उत्पन्न ब्रह्मा तथा अन्य प्रमुख देवता शक्ति प्राप्त करते है, जो वर देने वाली भगवती लक्ष्मी प्रसन्न हो कर सुख प्रदान करती है, उस महामाया पूर्ण लक्ष्मी भगवती कमला को मैं प्रणाम करता हूँ, और जो प्राणी सिर झुका कर आपको हृदय से नमन करते है, उनकी कभी भी दुर्गति नहीं होती, ऐसे साधक निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर अनन्त लोक तक वैभव सम्पन्न हो कर धन, धान्य, सम्मान, प्रसिद्धि कीर्ति और सुख को प्राप्त करते है। मैं आपका क्या वर्णन करूं, आप को हजार-हजार बार नमस्कार है।]

वास्तव में ही लक्ष्मी की साधना तंत्र मार्ग से ही संभव है, और यह कमला साधना के द्वारा सहज संभव है। कमला तंत्र में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जीवन में अतुलनीय धन, वैभव प्राप्त करने के लिए कमला साधना आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा ही जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कि आज के मनुष्य को चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है, कि कमला साधना एक तरफ जहाँ पूर्ण मानसिक शान्ति और सिद्धि प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अतुलनीय वैभव, और अनायास धन प्राप्ति होती रहती है। तंत्र में इसके द्वादश

नाम स्पष्ट हुए हैं। यदि कोई साधक केवल इन द्वादश नामों का उल्लेख या उच्चारण ही नित्य कर लेता है, तो भी उसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है। फिर यदि कोई कमला जयन्ती के अवसर पर एक बार भली प्रकार से कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है।

कमला के द्वादश नामों में है— १) महालक्ष्मी, २) ऋणमुक्ता, ३) हिरण्मयी, ४) राजतनया ५) दारिद्रय हारिणी, ६) कांचना, ७) जया, ८) राजराजेश्वरी, ९) वरदा १०) कनकवर्णा, ११) पद्मासना, १२) सर्वमांगल्य युक्ता।

कमला प्रयोग

यदि तांत्रिक दृष्टि से कमला साधना सम्पन्न की जाती है, तो निश्चय ही साधक आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है। जो तंत्र के क्षेत्र में थोड़ी बहुत भी रुचि रखते है, वे कमला तंत्र के नाम से परिचित है, और वे यह भी जानते है, कि यह तंत्र कितना अधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। एक प्रकार से देखा जाय तो कमला तत्र सर्वथा गोपनीय ही रहा है, मगर जो साधक पूर्ण निष्ठा के साथ इस कमला तत्र को सम्पन्न कर लेता है। उसे जीवन में समस्त सुख, वैभव और सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। दरिद्रता तो हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, अनायास धन प्राप्ति की संभावनाएं बन जाती हैं, और साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता हुआ, सही अर्थों में वैभव युक्त बन जाता है।

इस वर्ष ३०-१०-८९ को कमला जयन्ती है, साधक को चाहिए कि वे प्रातः काल उठ कर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाएं और फिर साधना प्रारम्भ करे। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व पूजन सामग्री अपने सामने रख दें, जिसमें जल पात्र, केसर, अक्षत, नारियल, फल, दूध का प्रसाद, पुष्प, आदि हो। कमला साधना में अष्ट गन्ध का प्रयोग ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, अतः साधकों को चाहिए कि वे पहले से ही अष्ट गन्ध प्राप्त कर उसे घोल कर अपने सामने रख दें।

कमला यंत्र

तांत्रोक्त कमला साधना का आधार 'कमला यंत्र' ही है। क्योंकि यह पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त और सिद्धिदायक है। कमला तंत्र में यंत्र के बारे में बताया है, कि वह पूर्ण विधि के साथ षटकोण सहित अष्टदलों से युक्त महत्वपूर्ण यंत्र हो।

अनुक्तकल्पे यन्त्रन्तु लिखेत्पद्मन्दाष्टकम् ॥
षटकोणकर्णिकन्तत्र वेदद्वारोपशोभितम् ॥

यह यंत्र ताम्र पत्र पर अंकित हो, साथ ही साथ कमला तत्र में बताया गया है, कि जब तक "तंत्रोद्धार" सम्पन्न यन्त्र न हो तो उसका प्रभाव नहीं होता, तंत्रोद्धार में बारह तथ्य स्पष्ट किये है, बताया है, कि इन तत्वों को सम्पन्न करके ही यंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

कमला तंत्र के अनुसार १) यह शुद्धता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिए, २) इसका पूर्ण रूप से मंत्रोद्धार हो, ३) यह वाग् बीज से सम्पुटित हो, ४) लज्जा बीज के द्वारा इसका अभिषेक हो, ५) श्री बीज के द्वारा यह मंत्र सिद्ध हो, ६) कामबीज के द्वारा यह वशीकरण युक्त हो, ७) पद्मबीज के द्वारा यह प्रभाव युक्त हो, ८) जगत बीज के द्वारा यह शीघ्र सिद्धिदायक हो, ९) रूपबीज के द्वारा यह आकर्षण युक्त हो, तथा १०) मनुबीज के द्वारा मन पर नियंत्रण प्रदान करने वाला हो, ११) ऐं बीज के द्वारा वैभव प्रदान युक्त हो, तथा १२) रमा बीज के द्वारा यह सिद्धिदायक हो।

तारम्पूर्ध्वं लिखित्वा परमलममलं त्वागभवम्बी जगन्य।

ल्लज्जाश्री बीजपूर्व्वं व्वशकरणतमंकामबीजम्प
रस्तात् ।।
ह्सौ पश्चाद्योजनीयं सुयुतमथ जगत्पूर्विकाया
प्रसूत्या ।
न्डेतं रुपन्नमोन्तन्निखिलमनुविदैम्मन्त्रमुक्त रमायाः।।

वास्तव में ही कमला यंत्र पूर्ण रूप से सिद्ध करना अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है। इस प्रकार का यंत्र पूजा स्थान में स्थापित कर साधना प्रारम्भ करे। ऐसा यंत्र जहां उनके स्वयं के जीवन के लिए तो सौभाग्यदायक रहेगा ही, आने वाली कई कई पीढ़ियों के लिए भी यह यंत्र भाग्योदयकारक बना रहेगा।

इस प्रकार के यंत्र को जल से और फिर दूध, दही, घी, शहद, शक्कर-पंचामृत से स्नान करा कर पुनः शुद्ध जल से धो कर लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर पीला वस्त्र स्थापित कर इस यंत्र को प्रतिस्थापित करना चाहिए। फिर साधक अलग पात्र में गणपति को स्थापन करे, दूसरे लकड़ी के बाजोट पर नवग्रहों को स्थापित करे और फिर एक थाली रख कर उस पर नया पीला वस्त्र बिछा दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगावे सबसे ऊपर चार बिन्दियां लगा दें, फिर उसके नीचे चार बिन्दियां लगावे, इस प्रकार चार लाइनों में १६ बिन्दियां स्थापित हो जाती है, तत्पश्चात प्रत्येक बिन्दी पर एक लौंग तथा एक इलायची रख कर फिर इसका अष्ट गन्ध से पूजन करे। और हाथ जोड़ कर ध्यान पढ़े—

उद्यन्मार्तण्ड - कान्ति - विगलित कवरीं कृष्ण
वस्त्रांवृतांगाम्
दण्डं लिंगं कराव्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम।
नाना रत्नैर्विभाता स्मित-मुख-कमलां सेवितां
देव-सर्वे
र्मांया राज्ञीं नमो भूत् स-रवि-कल-तनुमाश्रये
ईश्वरी त्वाम्।।

जो साधक संस्कृत पढे लिखे नहीं है, उनको चिन्ता नहीं करनी चाहिए और धीरे धीरे शब्द उच्चारण करते हुए यह ध्यान पढ़ सकते है।

फिर अपने सामने ॐ शंखायै नमः इस मंत्र से शख स्थापित करे, और पुष्प तथा अक्षत अपने सिर पर चढ़ा ले।

इसके बाद ताम्र पत्र पर अंकित "कमला यंत्र" को जहां सोलह बिन्दियां लगाई हुई है, उसके ऊपर पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करे, और अष्टगन्ध से इस यंत्र पर सोलह बिन्दियां लगा दे। ये सोलह बिन्दियां सोलह लक्ष्मी की प्रतीक मानी जाती है।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मंत्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यंत्र पर पुष्प अक्षत समर्पित करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्हेश्वरी सर्व-जन-मनोहारिणीं, सर्व-मुख-स्तम्भिनी, सर्व-स्त्री पुरुषाकर्षिणीं वन्दी-शृंखेनाःत्रोटय त्रोटय सर्व-शत्रूना भंजय-भंजय द्वेषि दलय दलय निर्दलय निर्दलय सर्व-शत्रूणां स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषि उच्चाटय उच्चाटय सर्व वशं कुरु कुरु स्वाहा। देवि सर्व सिद्धेश्वरि कामिनी-गणेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ममोषकल्पितां पूजां गृहाण मम सपरिवारं रक्ष रक्ष नमः।।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे उसका पूजन करे, तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करे, ऐसा करने के बाद साधक इस यंत्र पर कुंकुम समर्पित करे, पुष्प तथा पुष्प माला पहनाये, अक्षत चढ़ावे, तथा नैवेद्य का भोग लगावे। सामने ताम्बूल, फल, और दक्षिणा समर्पित करे।

तत्पश्चात् साधक को चाहिए कि वह निम्न दुर्लभ स्तोत्र का पांच बार पाठ करे जो कि महत्वपूर्ण है, इसके द्वारा उस यंत्र का साधक के प्राणों से सीधा संबंध स्थापित हो जाता है, और साधना सम्पन्न करने पर साधक को ओज, तेज, बल, बुद्धि, तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

इस स्तोत्र का उच्चारण सनत कुमार ने भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए किया था। कमला उपनिषद में भी इस लघु स्तोत्र का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है—

वाचं में दिशतु श्री देवी मनो में दिशतु वैष्णवी। ओजस्तेजो बल दाक्ष्य बुद्धिर्वैभवमस्तु में। त्वत्प्रसादाद भगवति! प्रज्ञानं मे ध्रुवं भवेत्। शन्नो दिशतु श्री देवी महा-माया वैष्णवी शक्तिराद्या। यामासाद्य स्वय मादि-देवो भगवान् परावरज्ञस्त्रिधा सम्भिन्नो लोकांस्त्रीन् सृजत्यवत्यत्ति च। यद् भ्रू विक्षेप बलमापन्नो ह्यब्ज-योनिस्तदितरे चामरा मुख्याः सृष्टि चक्र प्रणेतरः सम्बभूवुः। या वै वरदा स्वोपाया सुप्रसन्ना सुखयति सहस्त्र पुरुषान् ये लोकाः सन्तत मानमन्ति शिरसा हृदयेन चतामेकां लोक-पूज्यां न ते दुर्गति यान्ति भूताः॥

वास्तव में ही यह कमला उपनिषद जो कि ऊपर स्पष्ट किया है, वह अपने आपमें महत्वपूर्ण है, यदि साधक नित्य इसके ग्यारह पाठ करता है, तो भी उसके जीवन में धन, वैभव, यश, सम्मान प्राप्त होता रहता है।

प्रयोग में इसका पांच बार पाठ करके, फिर "कमला माला" का पूजन करना चाहिए। यह कमला माला विशेष मंत्रों से सिद्ध और सूर्य उपनिषद से संगुफित होती है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है, इस माला को पहले से ही प्राप्त करके रख देनी चाहिए।

इसके बाद साधक घी के सोलह दीपक लगा ले, निम्न कमला मंत्र की सोलह माला मंत्र जाप उसी आसन पर बैठे बैठे कर ले।

कमला मंत्र

ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौ जगत्प्रसूत्यै नमः॥

जब सोलह माला मंत्र जाप हो जाय तब भगवती लक्ष्मी की विधि विधान के साथ आरती सम्पन्न करें, और उस यंत्र को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दे, तथा कमला माला को इस यंत्र के सामने या यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें। भविष्य में जब भी कमला मंत्र का जप करना हो तो इसी कमला माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला फेरे।

वस्तुतः यह मंत्र और यह तांत्रिक प्रयोग अपने आपमें ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करे और अनुभव करे कि आज के युग में भी साधनाएं कितनी शीघ्र और अचूक फल प्रदान करने में समर्थ है। ★

कमला तंत्र

इस दीपावली पर्व पर और पत्रिका के इस अंक का यह श्रेष्ठतम प्रयोग है, जिसे दीपावली के दूसरे दिन संपन्न किया जाता है। सामान्य हिन्दी पढ़ा लिखा, साधक भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है।

यह प्रयोग सर्वथा गोपनीय दुर्लभ और महत्वपूर्ण रहा है। वास्तव में ही इस प्रयोग को सम्पन्न करने से व्यक्ति निकट भविष्य में ही आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है, और उसे विश्वास हो जाता है, कि आज के युग में भी तंत्र साधना शीघ्र सिद्धिप्रदायक एवं प्रभाव पूर्ण है।

ऐसा महत्वपूर्ण प्रयोग प्राप्त करने के बावजूद भी यदि कोई साधक इस लघु साधना को सम्पन्न नहीं करता, तो इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

लक्ष्मी का शुद्ध स्वरूप कमला ही है

तांत्रोक्त कमला साधना

तन्त्र शास्त्रों में लक्ष्मी की पूजा कमला स्वरूप में की जाती है और लक्ष्मी से सम्बन्धित पूर्ण तन्त्र को कमला तन्त्र कहा जाता है। दीपावली के दूसरे दिन किया जाने वाला एक विशेष प्रयोग—

देवी कमला महालक्ष्मी स्वरूपा जगत की आधार हैं जिनके बिना सृष्टि के सारे चक्र अधूरे रह जाते हैं। महामाया कमला आद्या शक्ति हैं, जिनकी कृपा दृष्टि से ही ब्रह्मा एवं अन्य देवता शक्ति प्राप्त करते हैं, और जो साधक महामाया पूर्ण लक्ष्मी भगवती कमला को हृदय से नमन करता है, उसकी कभी भी दुर्गति नहीं हो सकती। ऐसा साधक निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर अनन्त, अलौकिक वैभव, धन-धान्य, सम्मान, कीर्ति प्राप्त करता है।

कमला तन्त्र

वास्तव में ही लक्ष्मी की साधना तन्त्र मार्ग से ही सम्भव है और यह कमला साधना द्वारा सहज सम्भव है। **कमला तन्त्र** में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जीवन में अतुलनीय धन वैभव प्राप्त करने के लिए कमला साधना आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा ही जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कि आज के मनुष्य को चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है कि कमला साधना एक तरफ जहां पूर्ण मानसिक शान्ति और सिद्धि प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अतुलनीय वैभव और अनायास धन प्राप्ति होती रहती है। तन्त्र में इसके द्वादश नाम स्पष्ट हुए हैं। यदि कोई साधक केवल इन द्वादश नामों का उच्चारण नित्य कर लेता है, तो भी उसे

सिद्धि प्राप्त हो जाती है। फिर यदि कोई कमला जयन्ती के अवसर पर एक बार भली प्रकार से कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है। कमला के द्वादश नाम निम्नवत् हैं—

१-महालक्ष्मी, २-ऋणमुक्ता, ३-हिरण्मयी, ४-राजतनया, ५-दारिद्रय हारिणी, ६-कांचना, ७-जया, ८-राजराजेश्वरी, ९-वरदा, १०-कनकवर्णा, ११-पद्मासना, १२-सर्वमांगल्य युक्ता।

कमला प्रयोग

यदि तांत्रिक दृष्टि से कमला साधना सम्पन्न की जाती है, तो निश्चित ही साधक आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है, जो तन्त्र के क्षेत्र में थोड़ी बहुत भी रुचि रखते हैं, वे कमला तन्त्र के नाम से परिचित हैं, और वे यह भी जानते हैं कि यह तन्त्र कितना महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। एक प्रकार से देखा जाय तो कमला तन्त्र सर्वथा गोपनीय ही रहा है, मगर जो साधक पूर्ण निष्ठा के साथ इस कमला तन्त्र को सिद्ध कर लेता है, उसे जीवन में समस्त सुख, वैभव और सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। दरिद्रता तो हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, अनायास धन प्राप्ति की सम्भावनाएं बन जाती हैं, और साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता हुआ सही अर्थों में वैभव युक्त बन जाता है।

इस वर्ष २८-१०-९१ को कमला जयन्ती है, साधकों को चाहिए कि वे प्रातःकाल उठ कर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जांय और फिर साधना प्रारम्भ करें। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व पूजन सामग्री अपने सामने रख दें, जिसमें जलपात्र, केसर, अक्षत, नारियल, फल, दूध का बना प्रसाद, पुष्प आदि हो। कमला साधना में अष्ट-गन्ध का प्रयोग ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, अतः साधकों को चाहिए कि वे पहले से ही अष्टगन्ध प्राप्त कर उसे घोल कर अपने सामने रख लें।

कमला यन्त्र

तांत्रोक्त कमला साधना का आधार **कमला यन्त्र** ही है। क्योंकि यह पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त और सिद्धिदायक है। कमला तन्त्र में यन्त्र के बारे में बताया है, कि यह पूर्ण विधि के साथ षट्कोण सहित अष्टदलों से युक्त महत्वपूर्ण यन्त्र हो—

अनुक्तकल्पे यन्त्रस्तु लिखेत्पद्मन्दलाष्टकम्। षट्कोणकर्णिकतन्त्र वेदद्वारोपशोभितम्॥

यह यन्त्र ताम्र पत्र पर अंकित हो, साथ ही साथ कमला तन्त्र में बताया गया है, कि जब तक 'तन्त्रोद्धार' सम्पन्न यन्त्र न हो तो उसका प्रभाव नहीं होता, तन्त्रोद्धार में बारह तथ्य स्पष्ट किये गये हैं, बताया है कि इन तत्वों को सम्पन्न करके ही यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

कमला तन्त्र के अनुसार—

१-यह शुद्धता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिए, २-इसका पूर्ण रूप से मन्त्रोद्धार हो, ३-यह वाग् बीज से सम्पुटित हो, ४-लज्जा बीज के द्वारा इसका अभिषेक हो, ५-श्री बीज के द्वारा यह यन्त्र सिद्ध हो, ६-काम बीज के द्वारा वह वशीकरण युक्त हो, ७-पद्म बीज के द्वारा यह प्रभाव युक्त हो, ८-जगत् बीज के द्वारा यह आकर्षण युक्त हो, ९-रुद्र बीज के द्वारा वह आकर्षण युक्त हो, १०-मनु बीज के द्वारा मन पर नियन्त्रण प्रदान करने वाला हो, ११-ऐं बीज के द्वारा वैभव प्रदान युक्त हो, १२-रमा बीज के द्वारा सिद्धि दायक हो।

तारं पूर्वं लिखित्वा परमलममलं वाग्भवं बीजमस्य
ल्लज्जा श्री बीज-पूर्ववश-करण-तमं काम-बीजं परस्तात् ।
ह्सौः पश्चाद् जनीयंनसूयुतमधः जगत् पूर्विकायः प्रसूत्या
हेन्तं रूपं नमोत्तं निखिल-मनु-विदुर्मन्त्रमुक्तं रमायाः ।।

वास्तव में ही कमला यन्त्र पूर्ण रूप से सिद्ध करना अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है। इस प्रकार का यन्त्र पूजा स्थान में स्थापित कर साधना प्रारम्भ करें। ऐसा यन्त्र जहां उनके स्वयं के जीवन के लिए तो सौभाग्यदायक तो रहेगा ही, आने वाली कई-कई पीढ़ियों के लिए भी यह यन्त्र भाग्योदयकारक बना रहेगा।

इस प्रकार के यन्त्र को जल से फिर पचामृत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर) से स्नान कराकर पुनः शुद्ध जल से धोकर लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर इस यन्त्र को स्थापित करना चाहिए। फिर साधक अलग पात्र में गणपति की स्थापना करें। दूसरे बाजोट पर नवग्रहों को स्थापित करें और फिर एक थाली रख कर उस पर नया पीला वस्त्र बिछा दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगावें सबसे ऊपर चार फिर उनके नीचे चार-चार बिन्दियां चार पंक्तियों में, इस प्रकार कुल १६ बिन्दियां लगा कर प्रत्येक बिन्दी पर एक-एक लौंग तथा इलायची रख कर फिर इसका अष्टगन्ध से पूजन करें और हाथ जोड़ कर निम्न ध्यान मन्त्र का उच्चारण करें—

उद्यन्मार्तण्ड-कान्ति-विगलित कवरीं कृष्ण वस्त्रवृतांगाम् ।
दण्ड लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवन सन्दधतीं त्रिनेत्राम् ।।
नाना रत्नैर्विभातां स्मित-मुख-कमलां सेवितां देव-देव-सर्वै ।
भार्यां राज्ञीं नमो भूत स-रवि-कल-तनुमाश्रये ईश्वरीं त्वाम् ।।

जो साधक संस्कृत पढ़े-लिखे नहीं हैं, उनको चिन्ता नहीं करनी चाहिए और धीरे-धीरे शब्द उच्चारण करते हुए यह ध्यान पढ़ सकते हैं।

फिर अपने सामने 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र से **लक्ष्मी पद्म शंख** स्थापित करें और पुष्प तथा अक्षत अपने सिर पर चढ़ा लें।

इसके बाद ताम्र पत्र पर अंकित **"कमला यन्त्र"** को जहां सोलह बिन्दियां लगाई हैं, उसी पर पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करें, और अष्टगन्ध से इस यन्त्र पर सोलह बिन्दियां लगा दें। ये सोलह बिन्दियां सोलह लक्ष्मी की प्रतीक मानी जाती हैं।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मन्त्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यन्त्र पर पुष्प, अक्षत समर्पित करें—

आह्वान मन्त्र

ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। गायत्रीश्छन्दसे नमः मुखे। श्री जगन्मातृ महालक्ष्म्यै देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सर्वेष्ट सिद्धये मम धनाप्तये ममाभीष्टप्राप्तये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावें उसका पूजन करें तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें, ऐसा करने के बाद साधक इस यन्त्र पर कुंकुंम समर्पित करें, पुष्प तथा पुष्प माला पहिनाएं, अक्षत चढ़ावें तथा नैवेद्य का भोग लगावें। सामने ताम्बूल, फल, और दक्षिणा समर्पित करें।

तत्पश्चात् साधक को चाहिए कि वह निम्न दुर्लभ कवच का पांच बार पाठ करे जो महत्वपूर्ण है, इसके द्वारा उस यन्त्र का साधक के प्राणों से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, और साधना सम्पन्न करने पर साधक को ओज, तेज, बल, बुद्धि तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

इस कवच का उच्चारण सनत्कुमार ने भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए किया था। **कमला उपनिषद्** में भी इस लघु कवच का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है—

ऐंकारो मस्तके पातु वाग्भवी सर्व सिद्धिदा। ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुयुग्मे च शांकरी।
जिह्वायां मुख-वृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि। ओष्ठाधरे दन्त पंक्तौ तालु-मूले हनौ पुनः॥
पातु मां विष्णु वनिता लक्ष्मीः श्रीविष्णु रूपिणी। कर्ण-युग्मे भुज-द्वये-स्तन-द्वन्द्वे च पार्वती॥
हृदये मणि-बन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः। पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा॥
स्वधा तु-प्राण-शक्त्यां वा सीमन्ते मस्तके तथा। सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः॥
पुष्टिः पातु महा-माया उत्कृष्टिः सर्वदावतु। ऋद्धिः पातु सदादेवी सर्वत्र शम्भु-वल्लभा॥
वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर-गेहिनी। रमा पातु महा-देवो, पातु माया स्वराट् स्वयं॥
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णु-माया सुरेश्वरी। विजया पातु भवने जया पातु सदा मम॥
शिव-दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा। भैरवी पातु सर्वत्र भैरुण्डा सर्वदावतु॥
पातु मां देव-देवी च लक्ष्मीः सर्व-समृद्धिदा। इति ते कथितं दिव्य कवच सर्व-सिद्धवे॥

वास्तव में ही यह कवच जो कि ऊपर स्पष्ट किया गया है यह अपने आप में महत्वपूर्ण है, यदि साधक नित्य इसके ग्यारह पाठ करता है, तो भी उसके जीवन में धन, वैभव, यश, सम्मान प्राप्त होता रहता है।

प्रयोग में इसका पांच पाठ करें, फिर "**कमला माला**" का पूजन करना चाहिए। यह कमला माला विशेष मन्त्रों से सिद्ध और सूर्य उपनिषद् से संगुफित होती है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इस माला को पहले से ही प्राप्त कर रख लेनी चाहिए।

इसके बाद साधक घी के सोलह दीपक लगा लें, फिर निम्न कमला मन्त्र की सोलह माला मन्त्र जप उसी आसन पर बैठे-बैठे करें—

कमला मन्त्र

॥ ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः॥

जब सोलह माला मन्त्र जप हो जाय तब भगवती लक्ष्मी की विधि-विधान के साथ आरती सम्पन्न करें और उस यन्त्र को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें, तथा **कमला माला** को इस यन्त्र के सामने या यन्त्र के ऊपर स्थापित कर दे। भविष्य में जब भी कमला मन्त्र का जप करना हो तो इसी कमला माला से उपरोक्त मन्त्र की एक माला फेरें।

वस्तुतः यह मन्त्र और यह तांत्रिक प्रयोग अपने आपमें ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करें और अनुभव करें कि आज के युग में भी साधनाएं कितनी शीघ्र और अचूक फल प्रदान करने में समर्थ हैं। ★

Nov 88

+ 718 - लाया निवारण प्रयोग

शीघ्र मनोकामना सिद्धि प्रदायक

शूलिनी साधना

भगवती दुर्गा के नौ रूपों में शूलिनी का सर्वाधिक महत्व है, महाशैव तन्त्र में बताया गया है, कि जीवन मे एक बार अवश्य ही शूलिनी साधना सम्पन्न करनी चाहिए जिससे कि जीवन के समस्त पाप, रोग, शोक, दुख, दारिद्रय समाप्त हो सके ।

इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह "मनोकामना सिद्धि प्रदायक साधना" है, शास्त्रों में बताया गया है कि, साधक जो इच्छा ले कर इस साधना में बैठता है वह साधना समाप्त होते होते या साधना समाप्ति के कुछ ही दिनों बाद उसका मनोरथ अवश्य ही पूर्ण हो जाता है ।

इस वर्ष इस साधना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय २५-२६ दिसम्बर ८८ को है, दो दिनों में इस साधना को सम्पन्न कर साधक अपने मन की इच्छा पूर्ण कर सकते हैं ।

कई तांत्रिक ग्रन्थों में शूलिनी दुर्गा साधना के बारे में बहुत अधिक विवरण, वर्णन और महत्व दिया गया है, पवित्र शास्त्रों में और तांत्रिक ग्रन्थों में यह स्वीकार किया गया है कि कलियुग में शूलिनी साधना तुरन्त प्रभावयुक्त है, कई बार तो साधक जब तक मन्त्र जप समाप्त करता हैं, तब तक उसे मनोवांछित समाचार सुनने को मिल जाते हैं ।

चामुण्डा तन्त्र में बताया गया है कि जो साधक अपने जीवन में एक बार भी शूलिनी साधना सम्पन्न नहीं करता, उसके जीवन के सारे पुण्य अपने आप में ही क्षय हो जाते हैं, शाक्त ग्रन्थों में बताया गया है कि जो सही अर्थों में भगवती दुर्गा के उपासक हैं उनको अपने जीवन में शूलिनी साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, योगिनी तन्त्र में शूलिनी साधना करने के नौ लाभ

बताये हैं साथ ही साथ यह भी बताया है कि यदि साधक निष्ठापूर्वक दो दिनों की साधना को सम्पन्न करता है तो साधना समाप्त होते होते उसके कार्य सिद्ध हो जाते हैं ।

तन्त्र ग्रन्थों में वर्णित शूलिनी साधना के लाभ

योगिनी तन्त्र में इस साधना को सम्पन्न करने के निम्न नौ लाभ बताये हैं.- १. शत्रु पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करना, २. मुकदमों में शीघ्र और अनुकूल परिणाम प्राप्त करना, ३. मनोवांछित व्यक्ति या स्त्री से विवाह सम्पन्न होना, ४. रुका हुआ पैसा प्राप्त हो जाना या ऋण मुक्त हो जाना, ५. जीवन के समस्त पापों के नाश के लिए, ६. भगवती दुर्गा के साक्षात दर्शन के लिए, ७. समस्त प्रकार के रोगों को समाप्त करने के लिए और पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए, ८. मनोनुकूल और मनोवांछित कार्य की सफलता के लिए, ९. प्रत्येक प्रकार की साधना में तत्क्षण सफलता प्राप्त करने के लिए ।

मेरे अनुभव में यह आया है कि यदि साधक को किसी भी प्रकार की बाधा, परेशानी अथवा अड़चन हो, या कोई कार्य सिद्ध नहीं हो रहा हो, या प्रयत्न करने पर भी हम जिस प्रकार से चाहें उस प्रकार से कार्य सफल नहीं हो रहा हो, तो यह साधना अपने आप में अद्भुत् सिद्धिदायक और तत्क्षण सफलतादायक है, वास्तव में ही जब जब मेरे जीवन में किसी प्रकार की बाधा या अड़चन आई तो मैंने शूलिनी साधना का ही सहारा लिया, और मुझे हाथों हाथ अनुकूल परिणाम प्राप्त हुए, राज्य संकट, राज्य बाधा, रोग निवारण, शत्रुओं पर विजय और मनोवांछित कार्य सिद्धि के लिए तो यह साधना सर्वाधिक उपयुक्त है ।

साधना समय

यों तो इस साधना को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु यदि इसका समापन पुष्य नक्षत्र के दिन हो, तो सर्वाधिक उपयुक्त रहता है. २६ दिसम्बर को पुष्य नक्षत्र है, अतः साधकों को चाहिए कि २५ दिसम्बर को यह साधना प्रारम्भ करे, और २६ दिसम्बर को पुष्य नक्षत्र में इसका समापन कर दें ।

साधना सामग्री

शास्त्रों के अनुसार साधना स्थल शुद्ध और पवित्र करने के लिए, गंगाजल से धो लेना चाहिए या शुद्ध पानी से पवित्र कर लेना चाहिए. फिर साधना स्थल पर ही अच्छी लकड़ी का बाजोट बनाना चाहिए और उस पर लाल वस्त्र बिछा कर उसके मध्य में चावलों की ढेरी पर एक दीपक लगाना चाहिए, यह दीपक इस प्रकार का हो जिसकी आठ बत्तियां हो, अर्थात् पीतल का या मिट्टी के एक ही दीपक में एक साथ आठ बत्तियां लगानी चाहिए. जो अष्ट दुर्गाओं का प्रतीक है, पूरा मन्त्र जप इसी दीपक पर ध्यान केन्द्रित कर के करना है ।

उस बाजोट पर बीच में यह दीपक स्थापित हो, और बाजोट के चारों कोनों पर चार चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक ढेरी पर एक एक सुपारी. रखें. ये सभी महावीर हैं, जो कि कार्य सिद्धि में पूर्ण सहायक है, फिर दीपक के दाहिनी ओर गणेश और बांयी ओर क्षेत्रपाल को स्थापित करना चाहिए, इनकी स्थापना भी चावलों की ढेरी बना कर उस पर सुपारी रख कर गणेश या क्षेत्रपाल की भावना मन में रखते हुए उनकी स्थापना करनी चाहिए ।

इसके बाद दीपक और साधक के बीच में उस लकड़ी के बाजोट पर ही एक पात्र में शूलिनी यन्त्र की स्थापना करें, यह यन्त्र प्रामाणिक हो, (पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करने पर मात्र १५०)रु० न्यौछावर पर यह दुर्लभ यन्त्र भेजने की व्यवस्था की जा सकती है)

इसके अलावा जल पात्र, केसर, कुंकुम, अक्षत, नारियल, पुष्प, फल, और नैवेद्य पहले से ही ला कर

रख देना चाहिए, दीपक में शुद्ध घृत का प्रयोग करना चाहिए।

साधना प्रयोग

साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और फिर सर्व प्रथम कुंकुम, तथा केसर को मिला कर दीपक की पूजा करें–

ॐ नमो भगवति दीप-ज्योति-त्रिकोण-संस्थे अखण्ड-ज्योति, अखण्ड त्रिंशत्कोटि-देवता-मालिनी-निर्मल, अर्द्ध-रात्रि, निगम-स्तुते, ज्वाला-मालिनि दीप ज्योति, सर्व कार्य सिद्धि कुरु कुरु नमः।

इसके बाद दीपक की जो आठ बत्तियां लगी हुई है, उन अष्ट सिद्धियों की पूजा पुष्पों के माध्यम से करें, और प्रत्येक सिद्धि को तीन तीन पुष्प समर्पित करें, इस प्रकार २४ पुष्प समर्पित किये जाते हैं।

ॐ श्रीं ह्रीं अणिमा सिद्धयै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं गरिमा सिद्धयै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं महिमा सिद्धयै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं लघिमा सिद्धयै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं प्राप्ति सिद्धयै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं प्राकाम्य सिद्धयै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं ईशित्व सिद्धयै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं वशित्व सिद्धयै नमः।

इसके बाद शेष तीन पुष्प पात्र में स्थापित यन्त्र के सामने निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए समर्पित करें–

ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धि दात्र्यै नमः।

इसके बाद जो यन्त्र स्थापित किया हुआ है, उसके नैऋत्य कोण में एक चावल की ढेरी बना कर उस पर महासिंह का आह्वान इस मन्त्र से करें–

ॐ आं वज्र नख वज्र दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहाय हुं फट् नमः।

इस प्रकार पूजन कर साधक अपने गुरू के चित्र को स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करें, गुरू चरणों का ध्यान कर यह इच्छा प्रकट करें कि उसे शूलिनी साधना में सिद्धि प्राप्ति हो।

इसके बाद सामने जो दीपक लगा हुआ है, उस दीपक की सामने वाली ज्योति पर शूलिनी दुर्गा का ध्यान निम्न प्रकार से करें–

ध्यान

बिभ्राणां शूल-बाणान् असि-हरि-परिधान्, चाप-पाशान गदाभ्य,
वन्दे सिंहाधिरूढ़ां मम जननी महं, श्रद्धया वीर-भद्राम्।
एषां माता समेषां सुर-मुनि-विनुता शत्रु-संहार-दक्षा,
नत्या बुद्धा विशुद्धा ज्वलयतु, सततं मामकं चित्त-दीपम्॥

विशेष चिन्तन

साधक को दीपक के सामने की ज्योति में दृष्टि रखते हुए, यह ध्यान तब तक करते रहना चाहिए जब तक कि दीपक में भगवती शूलिनी के दर्शन न हो जांय, इसके लिए यदि साधक चाहें तो त्रिशूल के आकार का दीपक तैयार करवा सकते हैं, और एक ही दीपक में जो आठ बत्तियां लगाई जाती है उनमें बाकी बत्तियां भले ही धीमी गति से प्रज्वलित हों, पर सामने जो दीप शिखा है वह रूई की मोटी बाती हो, जिससे कि लौ थोड़ी ऊंची उठी हुई रह सके, और उसमें भगवती शूलिनी के साक्षात् दर्शन हो सकें।

कई साधकों को तो ग्यारह बार या इक्कीस बार ध्यान करने पर ही दर्शन या ज्वाला रूप में प्रकाश दिखाई दे जाता है; अतः साधकों को पूर्ण मनोयोग पूर्वक इस ध्यान का उच्चारण करना चाहिए, ज्यादा से ज्यादा

२१ बार उच्चारण किया जा सकता है।

यह साधना रात्रि को या दिन को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, इसके बाद साधक को चाहिए कि वह एक सौ आठ माला मन्त्र जप करे, इसमें दो विधान है, साधक एक ही रात में १०८ माला मन्त्र जप करे या पहले दिन ५४ माला मन्त्र जप करे और शेष दूसरे दिन ५४ माला मन्त्र जप कर साधना को पूर्णता प्रदान करें।

दूसरे दिन भी साधक माला मन्त्र जाप कर सकता है, पर दिन को ही मन्त्र जाप करना चाहिए और मन्त्र जाप के बाद १०८ आहुतियां मूल मन्त्र की दी जानी चाहिए ।

किसी पात्र में अग्नि को स्थापित कर, एक पात्र में तिल, चावल, शहद, गुड़ और राई मिला कर उसमें घी डाल कर मूल मन्त्र के साथ १०८ आहुतियां दी जानी चाहिए।

मूल मन्त्र

ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं क्ष्मूं दुं दुर्गायै नमः ।

दूसरे दिन जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब तक अखण्ड दीपक जलता रहना चाहिए, साधक प्रथम दिन रात्रि को साधना प्रारम्भ करे और दूसरे दिन सुबह स्नान आदि से निवृत्त हो कर शेष मन्त्र जप सम्पन्न कर १०८ आहुतियां पूरी कर दे, इस प्रकार यह साधना सम्पन्न हो जाती है।

साधना सम्पन्न करने के बाद यदि सम्भव हो तो किसी ब्राह्मण के यहां भोजन सामग्री भिजवा देनी चाहिए, अथवा किसी कुमारी कन्या को घर में बुला कर उसे भोजन करा कर यथोचित वस्त्र दक्षिणा आदि प्रदान करनी चाहिए, यदि यह सम्भव न हो तो किसी मन्दिर में जा कर संक्षिप्त भेंट करके साधना सम्पन्न माननी चाहिए।

दिसम्बर मास के व्रत पर्व त्यौहार

१.१२.८८	श्री काल भैरवाष्टमी
५.१२.८८	उत्पत्ति एकादशी व्रत
६.१२.८८	प्रदोष व्रत
११.१२.८८	नूतन चन्द्र दर्शन
१५.१२.८८	नरसी मेहता जन्म दिवस
१९.१२.८८	मोक्षदा एकादशी
२०.१२.८८	प्रदोष व्रत
२२.१२.८८	पूर्णिमा व्रत
२५.१२.८८	ईसा जन्म दिवस

इसके बाद इस यन्त्र को धागे में पिरो कर अपने गले में बांध लेना चाहिए या पूजा स्थान में रख देना चाहिए, दीपक में धीरे धीरे घी समाप्त होने पर अपने आप विसर्जित होने पर उठा कर एक तरफ रख दे, या मिट्टी का दीपक हो तो बाहर फेंक दे, लाल वस्त्र और उन पर जो चावलों की ढेरियां बनाई थी, उन सबको इसी लाल वस्त्र में बांध कर किसी मन्दिर में रख देना चाहिये अथवा तालाब में विसर्जित कर देना चाहिए।

वास्तव में शत्रु संहार,रोग निवारण, साधन सिद्धि और प्रत्यक्ष दर्शन के लिए यह पूर्ण सफल और समस्त कार्यों में सिद्धि प्रदायक साधना है ।

—योगीराज चैतन्य स्वामी

सूक्तियां

१. मुझे दुख इस बात का नहीं है कि उसने झूठ बोला, पर अब दुःख तो पूरे जीवन भर इस बात का रहेगा कि मैं उस पर पूरा विश्वास कैसे कर पाऊंगा ।

२. जीवन में लम्बे समय तक वे लोग ही जिन्दा रह सकते हैं, जो दया, सौन्दर्य, और सत्य के मूल तत्व को समझते हैं ।

३. आपके जीवन का कोई रहस्य खुल जाय, इस पर विचलित होने की जरूरत नहीं, विचलन तो तब अनुभव होती है, जब आप ऐसे वक्त भी धैर्य नहीं रख पाते । ※

जब सब प्रयोगों से थक जांय, तो यह कीजिये

ग्रह बाधा निवारण अनुष्ठान

इसमें कोई दो राय नहीं कि मानव के जीवन और भाग्य पर ग्रहों का बराबर प्रभाव रहता है, कई बार तो ऐसा होता है कि हम प्रयत्न करते हैं और जब सफलता दो चार हाथ दूर रह जाती है, तो सारा किया कराया काम बिगड़ जाता है हमने अपने जीवन में कई बार यह अनुभव किया होगा कि प्रयत्न करने पर भी व्यापार में सफलता नहीं मिल पा रही है, या जिस प्रकार से बिक्री बढ़नी चाहिये उस प्रकार से नहीं बढ़ रही है, अथवा घर में जो सुख-शान्ति होनी चाहिये वह नहीं हो पा रही है।

इसके अलावा भी कई छोटी-मोटी समस्याएं हैं, जिनसे मानव व्यथित रहता है और प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल पाती, इन कार्यों की सिद्धि और सफलता के लिए कई छोटे-मोटे टोटके, कई छोटे मोटे अनुष्ठान और प्रयोग करने पर भी जो अनुकूल फल प्राप्त होना चाहिये वह प्राप्त नहीं हो पाता तब देवताओं पर से हमारा विश्वास उठ जाता है, साधना से जी भर जाता है, और मन में ऐसा आता है कि शायद यह सब कुछ व्यर्थ है।

परन्तु इसके मूल कारण में "ग्रह बाधा" होती है, ज्योतिष का तो पूरा आधार ही ग्रह है, यों तो आकाश में सैकड़ों ग्रह हैं, परन्तु मुख्यतः नौ ग्रह ही हैं, जिनका प्रभाव जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे हमारे ऊपर पड़ता ही रहता है, और इन ग्रहों के प्रभाव से हमें अपने जीवन में सफलता-असफलता मिलती रहती है।

इसीलिए तो कहा गया है कि जब चारों ओर से आदमी थक जाय और किसी उपाय से समस्या का समाधान दिखाई नहीं दे, या कई बार प्रयत्न करने पर भी अनुकूल फल प्रतीत नहीं हो तब अवश्य ही समझ लेना चाहिए कि यह सब कुछ ग्रह बाधा की वजह से हो रहा है।

यों तो नौ ग्रहों में से कुछ ग्रह अनुकूल चलते रहते हैं, तो कुछ ग्रह विपरीत भी होते हैं, इसलिए किसी एक ग्रह के दोष निवारण की अपेक्षा "ग्रह बाधा दोष निवारण प्रयोग अनुष्ठान" सम्पन्न किया जाय तो साधक के समस्त ग्रह अपने आप ही अनुकूल हो जाते हैं, और हम अनुभव करने लगते हैं, कि जो काम हो नहीं रहा

था या जिस कार्य में बराबर बाधाएं और अड़चने आ रही थी वह कार्य सम्पन्न होने लगा है, और जो बाधाएं आ रही थी वह कम या समाप्त हो गयी है।

यह मेरे जीवन का अनुभव है, कि मैंने अपने जीवन में जब भी बाधाएं अनुभव की या अन्य अनुष्ठान सम्पन्न करने पर भी अनुकूल फल प्रतीत नहीं होने लगे तब मैंने इसी उपाय और अनुष्ठान का सहारा लिया और मुझे तुरन्त अनुकूल परिणाम प्राप्त हो गये।

एक बार तो एक विशेष प्रकार की साधना को सिद्ध करने के लिए छः बार प्रयत्न और प्रयोग किये पर प्रत्येक बार असफलता ही हाथ लगी, जब मैंने अपने गुरू से इसकी चर्चा की तो उन्होंने मुझे इस प्रयोग को बताया था, और कहा था कि तुम्हें पहले ग्रह बाधा निवारण प्रयोग सम्पन्न कर लेना चाहिए, जिससे कि ग्रहों का विपरीत परिणाम भोगना न पड़े और आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा अनुष्ठान करने के बाद जब मैंने मूल प्रयोग किया तो पहली ही बार में सफलता मिल गयी।

अनुष्ठान समय

इस अनुष्ठान को किसी भी दिन किया जा सकता है, जिस दिन चन्द्रमा और नक्षत्र अनुकूल हो, या जिस दिन हृदय में प्रसन्नता हो, उसी दिन इस अनुष्ठान को कर लेना चाहिए, या कोई विशेष ग्रह बाधा दे रहा हो, तो उस विशेष ग्रह के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

ग्रहों से सम्बन्धित प्रयोग करते समय उस ग्रह के प्रिय रंग वाले वस्त्र धारण करे और वैसे ही पुष्प अर्पित करें, ग्रह पूजा के साथ साथ दान करने का भी विधान है, नीचे मैं इससे सम्बन्धित विवरण दे रहा हूं-

क्र०सं०	ग्रह	दान	रंग	जप संख्या
१.	सूर्य	तांबा	गुलाबी	६०००
२.	चन्द्र	कांसा	सफेद	१०,०००
३.	मंगल	तांबा	लाल	७,०००
४.	बुध	पीतल	हरा	१७,०००
५.	गुरू	सोना	पीला	१८,०००
६.	शुक्र	तुला दान	सफेद	२०,०००
७.	शनि	लोहा	काला	१८,०००
८.	राहु	शीशा	काला	१८,०००
९.	केतु	खप्पर	काला	१८,०००

इसके अलावा सूर्य का रत्न- माणिक्य चन्द्रमा का रत्न- मोती, मंगल का रत्न- मूंगा, बुध का रत्न- पन्ना, गुरू का रत्न- पुखराज, शुक्र का रत्न- हीरा, शनि का रत्न- नीलम, राहु का रत्न- गोमेद और केतु का रत्न- लहसनिया होता हैं, यदि सम्भव हो, तो इन रत्नों का भी दान करना चाहिए।

इसके साथ ही साथ मैंने ग्रहों से सम्बन्धित जप संख्या बताई है, अब मैं प्रत्येक ग्रह का मूल मन्त्र स्पष्ट कर रहा हूं, जिनका जप करने से वह ग्रह पूर्णतः अनुकूल होता है।

नव ग्रह एवं उनसे सम्बन्धित मूल मन्त्र

१. सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं सः ।
२. चन्द्रमा	ॐ घों स्रौं सः ।
३. मगल	ॐ ह्रां ह्रीं सः ।
४. बुध	ॐ ह्रो ह्रो ह्रां सः ।
५. गुरू	ॐ त्रां त्रां त्रां सः ।
६. शुक्र	ॐ ह्रो ह्रीं सः ।
७. शनि	ॐ शां शां सः ।
८. राहु	ॐ छों छां छौं सः ।
९. केतु	ॐ फां फां फो सः ।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो इसका दसवां हिस्सा मन्त्र से घी और शहद मिला कर होम करना चाहिए, बाद में ब्राह्मण को भोजन करा कर उन्हें यथाशक्ति दान दक्षिणा दे कर इस अनुष्ठान को सम्पन्न करना चाहिए।

इसके अलावा मेरे गुरुदेव ने एक अत्यन्त ही गोपनीय ग्रह कवच स्तोत्र बताया था यदि यह अनुष्ठान सम्पन्न न हो सके तो केवल नित्य पांच बार या ग्यारह बार ग्रह कवच स्तोत्र का पाठ कर लिया जाय, तो पूरे जीवन में किसी भी प्रकार की ग्रह बाधा व्याप्त नहीं होती।

इसके लिए "नौ ग्रह कवच यन्त्र" अपने पूजा स्थान में स्थापित कर लेना चाहिए, इसमें सभी ग्रहों के मन्त्रों से यह यंत्र मन्त्र सिद्ध होता है, और पूरे जीवन भर के लिए उपयोगी होता है, आप किसी भी पण्डित से इस प्रकार का यन्त्र तैयार करवा लें, अथवा पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करने पर मात्र १२०)रू० अग्रिम भेजने पर आपके लिए इस प्रकार का दुर्लभ मन्त्र सिद्ध "ग्रह कवच यन्त्र" भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

अपने पूजा स्थान में किसी पात्र में इस दुर्लभ ग्रह कवच यन्त्र को स्थापित कर उसे जल से स्नान करा कर पोंछ कर कुंकुम या केसर से तिलक करें, सम्भव हो तो पुष्प चढ़ावे और सामने अगरबत्ती व दीपक प्रज्वलित करें, इसके बाद निम्न ग्रह कवच स्तोत्र का मात्र पांच बार पाठ करें।

ऐसा करने पर वह दिन तो मंगलमय होता ही है, सभी प्रकार के ग्रह दोष समाप्त हो कर जीवन में निरन्तर उन्नति के द्वार खुलते रहते हैं।

कवच के इस पाठ से शत्रु समाप्त होता है, रोग दूर होते हैं, मृत्यु भय दूर हो जाता है, और व्यापार, धन आदि में निरन्तर वृद्धि होती रहती है, इसके अलावा आकस्मिक संकट से तो निश्चय ही मुक्ति मिलती है।

ग्रह कवच स्तोत्र

विनियोग

ॐ अस्य जगन्मंगल-कारक ग्रह-कवचस्य श्री भैरव ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। श्री सूर्यादि-ग्रहाः देवता। सर्व कामार्थ-संसिद्धयै पाठे विनियोगः।

पार्वत्युवाच

श्री शान! सर्व शास्त्रज्ञ देवताधीश्वर प्रभो।
अक्षयं कवचं दिव्यं ग्रहादि-देवतं विभो।
पुरा संसूचितं गुह्यं सुभक्ताक्षय-कारकम्।
कृपा मयि तवास्ते चेत् कथय श्री महेश्वर।

शिव उवाच

शृणु देवि प्रियतमे! कवचं देव दुर्लभम्।
यद्धृत्वा देवताः सर्वे अमराः स्युर्वरानने।
तव प्रीति-वशाद् वच्मि न देयं यस्य कस्यचित्।

मूल कवच स्तोत्र

ॐ ह्रां ह्रीं सौः मे शिरः पातु श्री सूर्य ग्रह-पतिः। ॐ घौ सौ औं मे मुखं पातु श्री चन्द्रो ग्रह राजकः। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां सः करो पातु ग्रह-सेना-पतिः कुजः। पायादथ ॐ ह्रौ ह्रां सः पादौ ज्ञो नृप-बालकः। ॐ ञौं ञौं ञौं सः कटि पातु पायादमर-पूजितः। ॐ ह्रौ ह्रीं सौः दैत्य पूज्यो हृदयं परि रक्षतु। ॐ शौ शौ सः पातु नाभि मे ग्रह-प्रेष्यं शनैश्चरः। ॐ छौ छां छौ सः कण्ठ देशं श्री राहुर्देव-मर्दक। ॐ फौ फां फौ सः शिखी पातु सर्वांगमभितोवतु। ग्रहाश्चैते भोग-देहा नित्यास्तु स्फुटित-ग्रहाः। एतदशांश-सम्भूताः पान्तु नित्यं तु दुर्जनात्। अक्षयं कवचं पुण्यं सूर्यादि ग्रह-देवतम्। पठेद् वा पाठयेद् वापि धारयेद् यो जनः शुचिः। स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभां त्रिदशेस्तु याम्। तव स्नेह-वशादुक्तं जगन्मंगल-कारकम्। ग्रह-यन्त्रान्वितं कृत्वाभीष्टमक्षयमाप्नुयात्॥

॥ ग्रह यामले पार्वतीश्वर-संवादे जगद् दुर्लभाक्षय नाम कवचम् सम्पूर्णम्॥

feb-91

दुर्गा को प्रत्यक्ष किया जा सकता है इन तांत्रिक क्रियाओं से

भगवती दुर्गा की पूजा-आराधना के संबंध में जितने ग्रन्थों की रचना की गई है, संभवतया किसी अन्य के संबंध में इतनी अधिक रचना नहीं है इसका कारण भगवती दुर्गा की आधारभूत शक्ति जिसमें सम्पूर्ण विश्व की सगुण-निर्गुण शक्तियों का स्वरूप है। अलग-अलग स्वरूपों में अलग-अलग कार्य हैं, भगवती दुर्गा ही जगत पालक, माया-धीश्वरी है तथा संहारकारिणी आद्या-शक्ति भी है।

जीवन में सृजन और विखण्डन दोनों ही प्रक्रियाएं साथ-साथ चलती रहती हैं, इन दोनों के बिना जीवन प्रक्रिया चल ही नहीं सकती, शुद्ध भावों से शक्तियों का विकास साधक के लिए महत्वपूर्ण है, वहीं कष्ट, पीड़ा, शोक, और दुःखों का नाश भी आवश्यक है, इसीलिए मंत्र ज्ञाता हो चाहे तंत्र ज्ञाता, साधना किसी भी स्वरूप में साधक करें, उसे देवी भगवती दुर्गा की साधना के बिना सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

भगवती दुर्गा ही मूल प्रकृति, ईश्वरी, परब्रह्म स्वरूपा, परमतेज स्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार है।

देवी और इष्ट

साधना में इष्ट का बड़ा महत्व है, साधक जानते हैं कि वह अपने इष्ट स्वरूप को जिसे भी मानें, उसका अत्यन्त प्रबल होना आवश्यक है, तभी वह अपने कार्यों में सफल हो सकता है, अपने व्यक्तित्व को, तेज को प्रबल बना सकता है, इष्ट बिना ज्ञान नहीं, शक्ति नहीं, पूर्णता नहीं।

ऋग्वेद में लिखा है, कि भगवती दुर्गा ही सभी उपास्य देवों में प्रधान है, देवी शक्ति से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र उत्पन्न हुए, इन्द्र, अग्नि तथा स्वास्थ्य के देव अश्विनी कुमारों को धारण किये हुए हैं, यह परम-शक्ति देवी तो—

"निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या"

अर्थात् इस जगत में देवी के अतिरिक्त दूसरा कौन है, सब कुछ है जो भगवती दुर्गा का ही स्वरूप है, प्रकृति, माया, शक्ति सब देवी के पर्यायवाची हैं, इसीलिए जब

तक इष्ट स्वरूप दुर्गा प्रबल नहीं है, तो साधक की सब साधनाएं अधूरी हैं, यदि तत्काल कोई साधना सफल भी हो जाय तो जब तक इष्ट स्वरूप भगवती दुर्गा सिद्ध न हो जाय तब तक वह साधना-फल स्थायी नहीं रह सकता, क्योंकि साधना का आधार-शक्ति और शक्ति की आधार-भूत देवी भगवती जगदम्बा ही है।

साधक अलग-अलग नामों से अलग-अलग स्वरूप से पूजा करता है, पूजा लक्ष्मी स्वरूप में करें अथवा ज्ञान स्वरूप सरस्वती स्वरूप में करें, चण्डी, काली स्वरूप में करें, मूल स्वरूप तो दुर्गा साधना ही है।

यह सब तो देवी के असंख्य स्वरूप हैं, साधक अपनी समझ के अनुसार साधना करता है और जब वह इस परम-तत्व तक पहुँच जाता है, तो उसे सिद्धि प्राप्त होती ही है, अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग स्वरूपों में पूजा का शास्त्रोक्त विधान है, उसी रीति के अनुसार पूजा साधना सम्पन्न की जा सकती है।

मूल प्रश्न यह है कि क्या भगवती दुर्गा को प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध किया जा सकता है जिससे साधक को वह वरदहस्त प्राप्त हो जाय, अंधेरे में छलांग लगाने से कुछ लाभ नहीं है, साधक के लिए आवश्यक है, कि श्री गुरु-कृपा का फल प्राप्त कर उनके बताये गये निर्देशों के अनुसार साधना कार्य सम्पन्न करें, तो उसे सहज, सरल साधना मार्ग प्राप्त होता है।

१- सर्व सिद्धि प्रदायक प्रत्यक्ष दुर्गा सिद्धि प्रयोग

यह प्रयोग किसी भी दिन सम्पन्न किया जा सकता है, दुर्गा पूजा के लिए किसी भी प्रकार के मुहूर्त की आवश्यकता नहीं रहती, देवी रहस्य तन्त्र के अनुसार-दुर्गा पूजा में न तो कोई विशेष विधान है, न विध्न है और न कठिन आचार।

प्रातः सूर्योदय से पहले उठ कर साधक स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान को स्वच्छ करें, जल से धोकर स्थान शुद्धि और भूमि शुद्धि कर अपना आसन बिछाएं, आसन पर बैठ कर ध्यान करें, अपने चित्त को एकाग्र करें, कार्य सिद्धि साधना के संबंध में पूरे विश्वास के आधार पर कार्य करते हुए, संकल्प लें।

अपने सामने साधक सिंह पर स्थित देवी का एक बड़ा चित्र (तस्वीर) स्थापित करें, और एक ओर घी का दीपक तथा दूसरी ओर धूप अगरबत्ती इत्यादि जलाएं।

अब बांएं हाथ में जल लेकर दाएं हाथ से अपने मुख, शरीर इत्यादि पर छिड़कते हुए निम्न मन्त्रों के उच्चारण के साथ तत्व-न्यास सम्पन्न करते हुए, थोड़ा जल दोनों आंखों में लगा कर भूमि पर छोड़ दें।

ॐ आत्म तत्वाय नमः।
ॐ ह्रीं विद्या तत्वाय नमः।
ॐ दुं शिव तत्वाय नमः।
ॐ गुं गुरु तत्वाय नमः।
ॐ ह्रीं शक्ति तत्वाय नमः।
ॐ श्रीं शिव शक्ति तत्वाय नमः।

इस साधना में शुद्ध मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"दुर्गा यंत्र"** का महत्व विशेष रूप से है, सामने बाजोट (चौकी) पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर पुष्प की पंखुड़ियों का आसन बनाएं, तथा दुर्गा यंत्र को दुग्ध धारा से फिर जल धारा से धो कर, साफ कपड़े से पोंछ कर—

ॐ ह्रीं वज्रनख दंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट्।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए दुर्गा यंत्र को पुष्प के आसन पर स्थापित कर अबीर, गुलाल, कुंकुम, केसर, मौली, सिन्दूर अर्पित करें, इसके पश्चात् एक पुष्प-माला देवी के चित्र पर चढ़ाएं तथा दूसरी माला इस देवी यंत्र के सामने रख दें।

१-अब दुर्गा की शक्तियों का पूजन कार्य सम्पन्न करें, सामने दुर्गा यन्त्र के आगे 'नौ गोमती चक्र' स्थापित करें, प्रत्येक चक्र के नीचे पुष्प की एक-एक पंखुड़ी रखें, तथा चावल को कुंकुम से रंग कर मंत्र जप करते हुए इन नौ शक्तियों का पूजन सम्पन्न करें।

ॐ प्रभायै नमः। ॐ मायायै नमः।
ॐ जयायै नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः।
ॐ विशुद्धायै नमः। ॐ नन्दिन्यै नमः।
ॐ सुप्रभायै नमः। ॐ विजयायै नमः।
ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः।

अब गणेश पूजन कर देवी का पूजन सम्पन्न करें, अपने हाथ में धूप लेकर २१ बार धूप करें, फिर अपने स्थान पर पालथी मार कर बैठें, और दुर्गा अष्टाक्षर मंत्र का जप प्रारम्भ करें।

प्रत्यक्ष दुर्गा सिद्धि मंत्र

॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥

शारदा तिलक में लिखा है, कि शान्त हृदय से चित्त में शान्ति तथा एकाग्रता रखते हुए, साधक इस मन्त्र की ११ माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर करें तो उसे साक्षात् स्वरूप में प्रगट हो कर अष्ट-सिद्धि वरदान देती है, साधक को जो वर प्राप्त होता है, उससे साधक भैरव के समान हो जाता है, उसे अभय का वह स्वरूप प्राप्त हो जाता है कि उसके मन से भय, डर पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है, शरीर की व्याधियों का निवारण तथा दीर्घायु प्राप्ति के लिए भी यही विधान सर्वश्रेष्ठ है।

पूजा के पश्चात् साधक देवी की आरती सम्पन्न कर तथा ताम्र पात्र में रखे जल को आचमनी में ले कर ग्रहण करें तो उसके भीतर शक्ति का प्रादुर्भाव होता है।

२- चाथर्वणाय संहिता चण्डिका दुर्गा सिद्धि प्रयोग

दुर्गा का यह स्वरूप विशेष प्रबल तथा ज्वलनशील दाहक प्रयोग माना गया है, जो साधक राज्य-बाधा, शत्रु-बाधा, मुकदमे इत्यादि से विशेष दुःखी हो, चिन्ताओं का भार बढ़ता ही जा रहा हो, तो उसे इस स्वरूप की साधना अवश्य करनी चाहिए।

देवी दुर्गा कल्याणी स्वरूप है, जिनके तीव्र प्रभाव से दुष्टात्माओं का नाश हो जाता है और प्रबल से प्रबल शत्रु भी वश में होकर दास स्वरूप बन जाता है।

यह प्रयोग एक तांत्रिक प्रयोग है और रात्रि को ही सम्पन्न किया जाता है, इसके लिए कुछ विशेष सामग्री तथा विशेष अनुष्ठान की आवश्यकता रहती है, सामग्री

सहित सभी व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, एक बार साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् बीच में उठने का विधान वर्जित है।

रात्रि साधना स्वरूप

साधना सायंकाल के पश्चात् स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण करें, अपने पूजा स्थान में अथवा एकान्त कमरे में यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं, आसन ऊनी कम्बल अथवा मृगछाला हो सकता है, अपने सामने देवी का विकराल स्वरूप का चित्र स्थापित कर सिन्दूर से चित्र पर तिलक कर स्वयं भी तिलक लगाएं और आसन ग्रहण करें।

अपने सामने "चण्डी यन्त्र" शुद्ध रूप से धो कर घी लगा कर पोंछ कर काले तिलों की ढेरी पर स्थापित करें, एक ओर एक कलश स्थापित कर उस पर नारियल रखें, सर्वप्रथम कलश पूजन सम्पन्न कर भैरव का ध्यान कर मौली बांध कर एक सुपारी भैरव स्वरूप स्थापित करें, अब एक ओर धूप तथा दूसरी ओर दीपक जला कर एक कटोरे में देवी के सामने खीर का प्रसाद रखें, अब इस साधना में साधक वीर मुद्रा में बैठ कर पूजन कार्य प्रारम्भ करें, साधक का मुंह दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए, सर्वप्रथम देवी से प्रार्थना कर पूजन की आज्ञा प्राप्त कर ध्यान करें।

ध्यान मन्त्र

ॐ ह्ः ॐ सौं ॐ ह्लौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीजंयजय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके मम सकल मनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय निवारय नमो नमः ॥

अपने सामने यन्त्र के चारों ओर '२१ तांत्रोक्त फल' एक वृत्त में स्थापित करें, ऊपर लिखे ध्यान मन्त्र को बोलते हुए काले तिल और सरसों सिन्दूर, मिलाकर प्रत्येक बार ध्यान मन्त्र का जप कर एक तांत्रोक्त फल पर चढ़ाएं, इस प्रकार २१ तांत्रोक्त फलों पर यह प्रयोग सम्पन्न करना है, ये २१ तांत्रोक्त फल जीवन की २१ बाधाओं के स्वरूप हैं, जब यह प्रयोग पूर्ण हो जाय तो अपने ललाट पर चंदन से त्रिपुण्ड तिलक बनाएं तथा चण्डिका महा मन्त्र का जप कार्य प्रारम्भ करें।

चण्डी महा मन्त्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फट् ॥

इस प्रकार ११ माला जप कर पूजन कार्य सम्पन्न करें तथा यह मन्त्र जप मौन रूप से नहीं अपितु जोर-जोर से बोल कर सम्पन्न करना चाहिए, इस मन्त्र जप के मध्य में ही देवी के चण्डी स्वरूप के दर्शन होते हैं, साधक उसी मुद्रा में जप कार्य सम्पन्न करता रहे।

जब साधना पूर्ण हो जाय तो नमस्कार इत्यादि सम्पन्न कर आरती उतार कर, सामने रखे हुए खीर के प्रसाद को ग्रहण करना चाहिए।

तांत्रोक्त फल, सरसों तथा तिल को दूसरे दिन किसी एकान्त स्थान पर जाकर गाड़ देना चाहिए, यह सर्व दुःख नाशक चण्डी सिद्धि प्रयोग सम्पन्न करने से भय, बाधा का पूर्ण रूप से नाश हो जाता है।

इस मास के व्रत, पर्व, त्यौहार—(मार्च-९१)

५- रंग पंचमी	२०- श्री पंचमी	२८- महावीर जयंती
७- शीतला सप्तमी	२३- दुर्गाष्टमी	२९- पूर्णिमा व्रत
१२- पाप मोचनी एकादशी	२४- राम नवमी	३०- हनुमान जयंती
१७- नवरात्रि प्रारम्भ	२६- कामदा एकादशी	